'हीरक' - जयन्ती

कौल-कल्पतरु

चण्डी

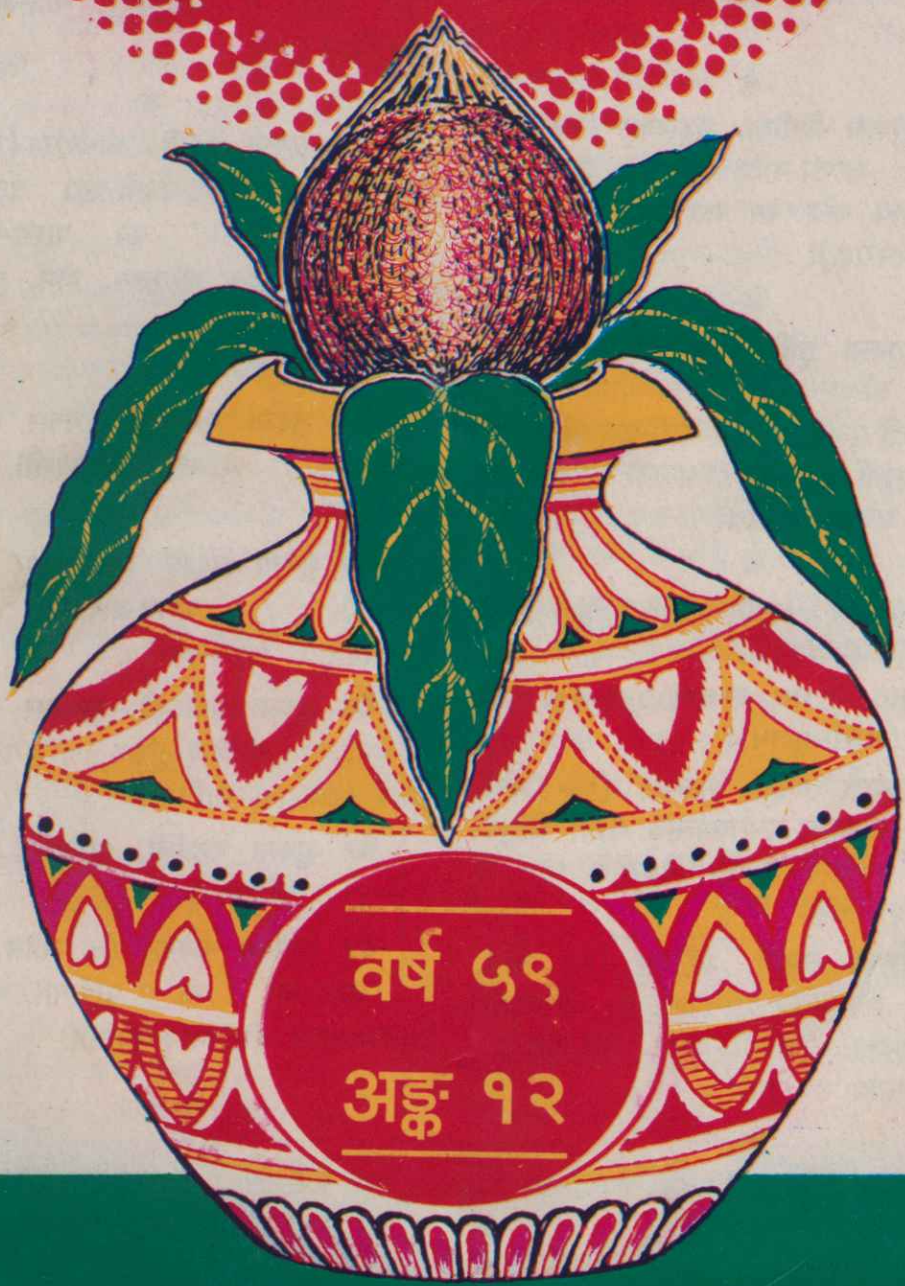

वर्ष ५९

अङ्क १२

वासन्तिक नव-रात्र 'जय'-संवत् २०५८ विक्रमी

(चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, 'सोम-वार' तदनुसार २६ मार्च, २००१ से)

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, सोमवार (२६ मार्च, २००१) : वासन्तिक नवरात्र प्रारम्भ। प्रातः-काल सतैल स्नान। ध्वजा-रोहण। संवत्सर-फल-श्रवण। **घट-स्थापना। 'चण्डी'-पाठारम्भ।** सप्त-दिवसीय पाठ-कर्त्ता **'सप्त-शती' के अध्याय १ का पाठ** करें।

★

चैत्र शुक्ला द्वितीया, मङ्गलवार (२७ मार्च, २००१) : चण्डी-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ-कर्त्ता **अध्याय २-३ का पाठ** करें। मत्स्यावतार तृतीया (अपराह्न)।

★

चैत्र शुक्ला तृतीया, बुधवार (२८ मार्च, २००१) : सौभाग्य-सुन्दरी-व्रत। गौरी-दोलोत्सव (शिव-पार्वती-पूजन)। गण-गौरी-व्रत। **वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत।** चण्डी-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ-कर्त्ता **अध्याय ४** पढ़ें।

★

चैत्र शुक्ला चतुर्थी-पञ्चमी, वृहस्पतिवार (२९ मार्च, २००१) : 'चण्डी'-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **चार अध्याय ५-६-७-८** पढ़ें। **श्री-पञ्चमी** (लक्ष्मी-पूजन)।

चैत्र शुक्ला षष्ठी, शुक्रवार (३० मार्च, २००१) : श्रीस्कन्द-दमनकोत्सव षष्ठी। **श्रीसूर्य-षष्ठी-व्रत।** चण्डी-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ९-१०** पढ़ें।

चैत्र शुक्ला सप्तमी, शनिवार (३१ मार्च, २००१) : श्रीभास्कर-दमनक-पूजा। **श्रीभवानी-अन्नपूर्णा-परिक्रमा।** 'चण्डी'-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ११** पढ़ें।

★

चैत्र शुक्ला अष्टमी, रविवार (१ अप्रैल, २००१) : **महा-अष्टमी-व्रत।** श्रीभवानी-जयन्ती। श्रीतारा-जयन्ती। श्रीअशोक-अष्टमी। 'चण्डी'-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय १२-१३** पढ़ें। **रात्रि में चक्रार्चन, महा-अष्टमी-पूजन, महा-निशा-पूजन।**

★

चैत्र शुक्ला नवमी, सोमवार (२३ अप्रैल, २००१) : **श्रीराम-नवमी-व्रत।** सप्त-दिनात्मक **'वासन्तिक नवरात्र' का पारण-पूजन-पर्वक, क्षमापण-स्तोत्र-पाठ, नीराजन, होम, कुमारी-पूजन** आदि।

★

चैत्र शुक्ला एकादशी बुधवार (४ अप्रैल, २००१) : **कामदा एकादशी।** श्रीविष्णु दोलोत्सव।

चैत्र शुक्ला द्वादशी, वृहस्पतिवार (५ अप्रैल, २००१) : **वामन-द्वादशी।** श्रीविष्णु-दमनकोत्सव। **प्रदोष-व्रत।**

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, शुक्रवार (६ अप्रैल, २००१) : श्रीशिव-नृसिंह - दमनकारोपण-पूजन (अपराह्न-व्यापिनी)।

चैत्र शुक्ला चतुर्दशी, शनिवार (७ अप्रैल, २००१) : पूर्णिमा-व्रत।

चैत्र पूर्णिमा, रविवार (८ अप्रैल, २००१) : स्नान-दान की पूर्णिमा। सर्व-देव-दमनकोत्सव। **श्रीहनुमान-जयन्ती।**

* * *

'चण्डी' का नया ६०वाँ वर्ष

'चण्डी' का **नया ६०वाँ वर्ष** अप्रैल, २००१ से प्रारम्भ हो रहा है। **नए ६०वें वर्ष** में **'चण्डी'** के **१२ सामान्य अङ्क** प्रकाशित होंगे और **६ विशिष्ट अङ्क** प्रकाशित होंगे।

१२ सामान्य अङ्क

'चण्डी' के **१२ सामान्य अङ्क** प्रति मास २०वीं तिथि को प्रकाशित होंगे और सदस्यों की सेवा में **साधारण डाक** से भेजे जाऐंगे।

'चण्डी' के **१२ सामान्य अङ्कों का वार्षिक अनुदान १००/- रु०** मात्र होगा, जिसे **मनीआर्डर** द्वारा भेजना होगा।

६ विशिष्ट अङ्क

जो बन्धु **'चण्डी'** के **६ विशिष्ट अङ्क** भी मँगाएँगे, उन्हें **साधारण अङ्क** और **विशिष्ट अङ्क** दोनों एक साथ **वी०पी०पी०** द्वारा भेजे जाएँगे, जो रियायती मूल्य की अधिक-से-अधिक **५०/- रु०** की होगी।

विशेष सूचना

सभी बन्धु कृपया **मनीआर्डर** द्वारा **'चण्डी' वर्ष ६० हेतु** १००/- रु० निम्न पते पर भेजने की कृपा करेंगे—

व्यवस्थापक, चण्डी कार्यालय,
प्रयाग-राज २११००६ (उ०प्र०)

■ **सम्पादक**
रमादत्त शुक्ल, ऋतशील शर्मा

■ **पता :**
श्रीचण्डी-धाम
अलोपीदेवी मार्ग, प्रयाग-राज
दूरभाष : (०५३२) ५०२७८३

■ **प्रकाशक :**
पं० देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान,
प्रयाग-राज (उ०प्र०) - २११००६

'कौल-कल्पतरु' चण्डी
फाल्गुन, 'विजय' सं० २०५७ वि०
मार्च, २००१
वासन्तिक नवरात्र-अङ्क

इस अङ्क में

वासन्तिक नवरात्र 'जय'-संवत् २०५८ वि० (आवरण पृष्ठ)
■ वासन्तिक नवरात्र एवं नवीन 'जय'-संवत्सर ३१४
■ श्रीचामुण्डा-चालीसा ३१६
■ चारों वेदों द्वारा श्रीदेवी की स्तुति ३१८
■ साधक का संवाद ३२०
■ श्रीसूर्य-अष्टोत्तर-शत-नामावली ३२७
■ श्रीसोम (चन्द्र)-अष्टोत्तर-शत-नामावली ३२९
■ श्रीमङ्गल-अष्टोत्तर-शत-नामावली ३३१
■ श्रीबुध-अष्टोत्तर-शत-नामावली ३३३
■ श्रीबृहस्पति-अष्टोत्तर-शत-नामावली ३३५
■ श्रीशुक्र-अष्टोत्तर-शत-नामावली ३३७
■ श्रीशनि-अष्टोत्तर-शत-नामावली ३३९
■ श्रीराहु-अष्टोत्तर-शत-नामावली ३४१
■ श्रीकेतु-अष्टोत्तर-शत-नामावली ३४३
'ग्रह' नहीं 'ग्रहों' के भावों को जानें! (आवरण पृष्ठ)

सूचना : 'चण्डी' के ६०वें वर्ष के विशिष्ट अङ्क

'चण्डी' के ६०वें वर्ष का पहला विशिष्ट अङ्क— **'मन्त्रात्मक सप्तशती' (पहला खण्ड)** होगा। यह रियायती मूल्य की वी०पी०पी० द्वारा सभी पाठकों की सेवा में **२० अप्रैल, २००१** को भेजा जाएगा।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि पाठकों की माँग पर **गुप्तावतार बाबाश्री** द्वारा प्राप्त दुर्लभ **'मन्त्रात्मक सप्तशती'** का नई साज-सज्जा के साथ पुनः प्रकाशन हो रहा है। आशा है कि **'चण्डी'** के **पाठक-बन्धु** इसके **नवीन संस्करण** को न केवल स्वयं सहर्ष स्वीकार करेंगे, अपितु अपने परिचित श्रद्धालुओं को भी इसे प्राप्त करने की प्रेरणा देंगे। इससे हमें प्रकाशन-कार्य में विशेष सुविधा होगी।

—ऋतशील शर्मा

वासन्तिक नवरात्र *एवं* नवीन 'जय'-संवत्सर

❖ पं०कृपाशङ्कर दुबे शास्त्री, ८५ए सेक्टर वाई बर्रा भाग दो, इ.डब्लू. एस., कानपुर-२७, उ०प्र०

सृष्टि के रचयिता परम पिता ब्रह्मा जी ने सृष्टि-सृजन का कार्य **चैत्र शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि** से आरम्भ किया था। **नए संवत्सर** की गणना तथा **'वासन्तिक नवरात्र'** का शुभारम्भ उक्त तिथि से ही होता है। **सोमवार २६ मार्च, २००१** से **नूतन संवत् २०५८ विक्रमी— चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि** का शुभारम्भ है। नए संवत् का नाम **'जय'** है। अतः सम्पूर्ण वर्ष **संवत् २०५८ विक्रमी** में सभी धार्मिक कृत्यों में **सङ्कल्प में संवत् का नाम 'जय'** कहा जाएगा।

''जय''-संवत् का फल

मानुषा दुःख सङ्कष्टे, जगद् द्वन्द्व समाकुलम्। सुभिक्षं स्वस्थता राष्ट्रे, जये चैव वरानने।।

अर्थात् शिवजी पार्वती जी से कहते हैं कि हे सुमुखि! **'जय'-संवत्** में लोग सङ्कटों से घिरे रहेंगे। संसार में सङ्घर्ष की स्थिति रहेगी। देश में लोग स्वस्थ्य एवं बलवान होंगे तथा **'जय'-प्राप्ति की कामना** करेंगे। **'जय'-संवत्** के स्वामी **वृहस्पति** हैं, जिससे **धार्मिक आस्था की वृद्धि** होगी।

दिव्य शासक-मण्डल के पदाधिकारी

१- **राजा चन्द्रमा**—राजा चन्द्रमा के होने से विपुल वृष्टि, माङ्गलिक कार्य, कृषि उत्पादन में वृद्धि एवं विश्व-प्रगति का योग बनता है।

२- **मन्त्री शुक्र**—मन्त्री शुक्र होने के कारण कीट-पतङ्गों, चूहों आदि से कृषि को हानि का योग है।

३- **सस्येश चन्द्रमा**—सस्येश चन्द्रमा के होने से प्रजा को सुख का अनुभव होगा। यज्ञ, अनुष्ठान आदि धार्मिक कृत्यों में रुचि बढ़ेगी।

४- **धान्येश शनि**—धान्येश शनि के होने के कारण राष्ट्र परस्पर सङ्घर्ष करते हैं। कहीं-कहीं दुर्भिक्ष की सम्भावना भी रहती है।

५- **मेघेश गुरु**—मेघेश गुरु के होने से उत्तम वृष्टि, जन-समुदाय में प्रसन्नता होगी।

६- **रसेश बुध**—रसेश बुध के होने से फलों की उत्पत्ति उत्तम होगी।

७- **नीरसेश चन्द्रमा**—नीरसेश चन्द्रमा के होने से सफेद वस्तुओं, वस्त्र, रुई, चाँदी, दूध, दही के भाव वृद्धि को प्राप्त होंगे।

८- **फलेश गुरु**—फलेश गुरु के होने से धार्मिक कृत्यों की आधिक्यता रहेगी। पर्यावरण को शुद्ध करने की चेष्टा होगी।

९- धनेश रवि—सूर्य के धनेश होने पर व्यापार अच्छा होगा। क्रय-विक्रय के कार्य में प्रगति होगी।

१०- दुर्गेश गुरु—वृहस्पति के दुर्गेश होने से सम्पूर्ण राष्ट्र की सुरक्षा होगी।

वासन्तिक नवरात्र, 'जय'-संवत् २०५८ वि०

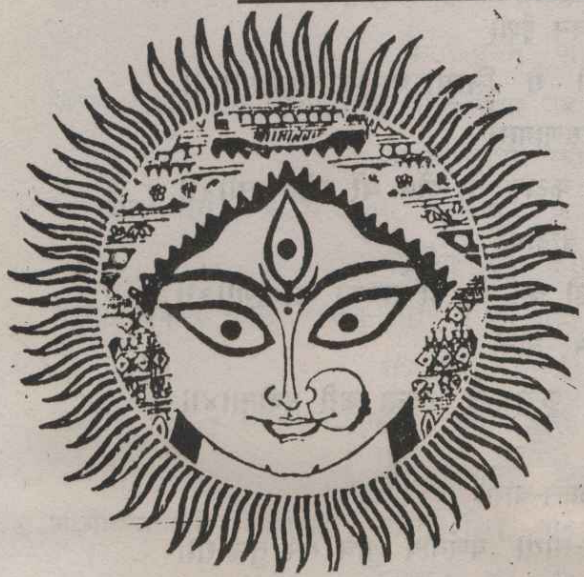

चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा, सोमवार २६ मार्च, २००१ से **'वासन्तिक नवरात्र'** आरम्भ है। **'नवरात्र'-व्रत** से सम्बन्धित महत्व-पूर्ण तथ्य इस प्रकार हैं—

(१) **'नवरात्र-व्रत'** के लिए **अमावास्या-युक्त प्रतिपदा का निषेध** है। **द्वितीया-युक्त प्रतिपदा ही श्रेयष्कर** है। **२६ मार्च, २००१** को **प्रतिपदा तिथि** दिन में **७ बजकर, ६ मिनट** तक है। उसके पश्चात् **द्वितीया तिथि** है। अतः **'कलश'-स्थापना,** जौ बोने आदि समस्त कार्यों के लिए **सोमवार, २६ मार्च २००१** का सम्पूर्ण **द्वितीया-युक्त दिवस प्रतिपदा के रूप में श्रेयस्कर** है।

(२) **'अष्टमी'**-तिथि— **१ अप्रैल, २००१ रविवार** को है। इस दिन **'अष्टमी'-तिथि प्रातः-काल से रात्रि १२ बजकर, १२ मिनट तक** है।

(३) **'नवमी'**-तिथि— **सोमवार, २ अप्रैल २००१** को **रात्रि नौ बजकर, ५५ मिनट तक** है। अपनी **'कुल'-परम्परा** के अनुसार **'अष्टमी'** अथवा **'नवमी'**-तिथि में हवन कर **'कन्या'-भोजन** आदि कराकर **भगवती से अपराध-क्षमा-याचना** करते हुए **'अन्न'-ग्रहण** करना चाहिए। **'नवमी'**-तिथि, **२ अप्रैल, २००१** को **रात्रि ९ बजकर, ५५ मिनट** तक है। अतः **'अन्न'-ग्रहण करने का सर्वोत्तम समय रात्रि ९ बजकर, ५५ मिनट** के पश्चात् ही है।

विशेष— 'नवरात्र' में अखण्ड दीपक जलाकर **श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठ, नवार्ण मन्त्र का जप, श्रीदेवी भागवत का पाठ** सभी कामनाओं को सफल करने का श्रेष्ठ उपाय है। **भगवान् श्रीराम** ने भी **सीता जी** की प्राप्ति और अपनी विजय-श्री के लिए **'नवरात्र'-व्रत** किया था। **श्रीदेवी भागवत** के अनुसार **'नवरात्र'-व्रत** अति पावन है, जो इसे श्रद्धा-पूर्वक करते हैं, वे धरती के सभी सुख-सम्पदा प्राप्त करते हैं।

कल्याण मन्दिर प्रकाशन, प्रयाग-राज से **'नवरात्र'-पर्व**-सम्बन्धी कई उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनसे भक्तों को लाभ उठाना चाहिए। यथा— **१ वैदिक नवरात्र पूजा पद्धति ३/-, २- नवरात्र-कल्पतरु ३०/-, ३- बीजात्मक सप्तशती ६/-, ४- श्रीदुर्गा सप्तशती (पद्यानुवाद) १२/-, ५- विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती) २०/-।**

★ श्रीगणेशाय नमः ★

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।

श्रीचामुण्डा-चालीसा

❖ डॉ० जगदीशशरण बिलगइयाँ द्विवेदी "मधुप", दतिया (म०प्र०)

।।वन्दना।।

जय-जय-जय परमेश्वरी, वन्दित त्रिभुवन ईश।
कृपा आपकी से लिखा, चामुण्डा-चालीस।।१।।
जयतु-जयतु जगदीश्वरी, जय-जय करुणागार।
तेरी कृपा - कटाक्ष से, शेष धरें महि-भार।।२।।
तन, मन, धन से दीन हूँ, माँगूँ यह वरदान।
विश्व निरत हो धर्म में, हो सबका कल्याण।।३।।
युग-सहस्र चालीस शुभ, वत्सर ऊपर तीन।
चामुण्डा की कृपा से रचना करी नवीन।।४।।

।।पाठ।।

माँ! काली धूमा तुम तारा देवि! छिन्नमस्ता असि-धारा।
तुम मातङ्गी त्रिभुवन-सारा। वर्णनीय शुचि रूप तुम्हारा।।
रमा भूतिदा जय जग-पाली। दरिद्र-नाश-हित कठिन भुजाली।
त्रिपुर-सुन्दरी, भैरवि बाला। भक्तन-हित तुम परम कृपाला।
बगला! माँ बन विष्णु-स्वरूपा। उद्धारहु भक्तन भय-कूपा।
उमा अपर्णा सती भवानी। ब्रह्म-चारिणी शिव-पटरानी।
गौरी हेमवती कूष्माण्डा। काल-रात्रि षड्-मातु सुभाण्डा।
कात्यायनी सिद्धिदा माता। नव-दुर्गा नव - रूप-प्रदाता।
गरुड़ासना वैष्णवी देवी। गजारूढ़ ऐन्द्री सुर - सेवी।
माहेश्वरी वृषभ-आरूढ़ा। हरत भक्त की विमति सुगूढ़ा।
श्वेत - रूप - धारी रुद्राणी। हंस - समारूढ़ा ब्रह्माणी।
कौमारी तुम शूल-धारिणी। बन त्रिशूल भव-शूल-हारिणी।
शिवा शाम्भवी काल-कालिका। माला-धारी सतत् बालिका।
शशि तव कला मानदा माया। कामाक्षी कामा कमलाया।

कुलेश्वरी कुल - रूप तुम्हारा। सृजत करत पालन संहारा।
ललित लता ललिता लं-रूपा। वसुन्धरा वसुदा शिव-रूपा।
पार्वती जय - जय सुमङ्गला। हरत सदा अघ-ओघ दङ्गला।
गुह्येश्वरी कामिका कलदा। आशुतोष - रूपा शुभ फलदा।
धर्म - धारिणी धर्म हमारा। रक्षक बनकर देहु सहारा।
देवि जयन्ती पाप - नाशिनी। यश-वैभव-नित-नव-प्रकाशिनी।
जयतु भद्र-काली कपालिनी। जयतु क्षमा जय मुण्ड-मालिनी।
जयतु स्वधा स्वाहा तव - रूपा। चैतन्या सुरपोष अरूपा।
रक्त-बीज मधु - कैटभ मारे। चण्ड-मुण्ड कर खण्ड विदारे।
षड्-रिपु दूर करो भव भामा। सर्व शत्रु हर मम हरि रामा।
ब्रह्मा - विष्णु - रुद्र - तनु-धारी। तुम्हीं मातु गायत्री प्यारी।
शाकम्भरी सुनन्दा भीमा। रक्त - दन्तिका शक्ति असीमा।
अग्नि - वायु - रवि-तत्त्व तुम्हारे। ऋक्-यजु-साम-वेद विस्तारे।
करो यशस्वी विनय हमारी। विद्यावन्त करो महतारी।
लक्ष्मीवन्त करो जगदम्बा। दासन हित नहिं करो विलम्बा।
रूपवान कर दो परमेशी। जरहिं सकल खल-दल विद्वेषी।
कर कल्याण दया-व्रत-धारी। विनती सुन गिरि-राज-कुमारी।
ऐं-बीज जो जपत हमेशा। ब्रह्म - समान होत सुरशेषा।
हों वागीश चरण के चेरे। बनें दास सब सिद्ध घनेरे।
वागीश्वरी करें उर आसना। पालै सब त्रिभुवन अनुशासना।
शक्ति-प्रणव है हीं तुम्हारा। पालन करत सकल संसारा।
अंधकार अघ-ओघ नसावै। साधक शक्ति-रूप हो जावै।
अष्ट-सिद्धि नव-निधि नित द्वारे, साधक के गुण-गान उचारे।
क्लीं कामना - बीज सभी का। चामुण्डा बिच्चे पद जी का।
यह नवार्ण जापै जो कोई। हरि - हर - ब्रह्म-सदृश सो होई।
गति स्वच्छन्द मुदित 'जगदीशा'। सन्तत हों कृपालु भव ईशा।

॥फल-श्रुति॥

चामुण्डा - चालीस, जो नित पढ़त धर ध्याना।
कहत 'मधुप' जगदीश यह, करें सकल कल्याण॥

'वासन्तिक नवरात्र' के पावन अवसर पर :

चारों वेदों द्वारा—

श्रीदेवी की महिमा का वर्णन एवं स्तुति

ऋग्वेद— यदन्तः-स्थानि भूतानि, यतः सर्वं प्रवर्तते।
यदाह तत्परं तत्त्वं, साक्षात् भगवती स्वयम्॥

अर्थात्—'सभी प्राणी जिसमें अन्तर्भुक्त हैं, जिससे सभी अपने-अपने कर्म में प्रवृत्त होते हैं। जिसे 'परम तत्त्व' कहते हैं, वह साक्षात् भगवती ही हैं।'

यजुर्वेद— या यज्ञैरखिलैः सर्वैरीश्वरेण समिज्यते।
यतः प्रमाणं हि वयं, सैका भगवती स्वयम्॥

अर्थात्— 'ईश्वर द्वारा समस्त यज्ञों से जो पूजित होता है; वह एक-मात्र स्वयं भगवती ही हैं— इसमें हम 'वेद' प्रमाण हैं।'

सामवेद— ययेदं धार्यते विश्वं, योगिभिर्या विचिन्त्यते।
ययेदं भासते विश्वं, सैका दुर्गा जगन्मयी॥

अर्थात्—'जिसके द्वारा यह विश्व धारण किया जाता है, जिसका योगी-गण चिन्तन करते हैं, जिससे यह जगत् प्रकाशमान् है, वह एक-मात्र जगन्माता दुर्गा भगवती ही हैं।'

अथर्ववेद— यां प्रपश्यन्ति देवेशीं, भक्त्यानुग्रहिणो जनाः।
तामाहुः परमं ब्रह्म, दुर्गां भगवतीं पुमान्॥

अर्थात्—'भक्ति से अनुग्रहीत होकर लोग जिन देवी का साक्षात्कार करना चाहते हैं, उन भगवती दुर्गा को श्रेष्ठ पुरुष परम ब्रह्म कहते हैं।'

* * *

चारों श्रुतियों द्वारा भगवती की स्तुति

☐ **हे भगवति दुर्गे!** आप हम पर प्रसन्न हों। सृष्टि, पालन एवं संहार— इन तीन कार्यों में ब्रह्मा आदि तीनों देवता अपने-अपने गुणों के अनुसार आपकी इच्छा से ही व्यवस्थित हैं। **हे माता!** इस संसार में आपसे अधिक समर्थ कोई भी नहीं है क्योंकि इस लोक में आपके गुणों के वर्णन की क्षमता किसी में नहीं है।

☐ **हे माता!** आपकी आराधना के बल पर ही भगवान् विष्णु युद्ध-भूमि में कठिनता से जीतने योग्य राक्षसों को मारकर त्रि-लोक की रक्षा करने में समर्थ हुए हैं। आपके चरणों को हृदय पर रखकर ही भगवान् शङ्कर त्रि-लोक का संहार करते हैं तथा त्रि-लोक को नष्ट करनेवाले काल-कूट विष का पान करने में समर्थ होते हैं।

☐ **हे अम्बिके!** प्रत्येक प्राणी के शरीर में जो परम पुरुष की शक्ति है, उसे अपने गुणों के कारण आपकी माया के वशीभूत होकर कोई **'देहात्मिका शक्ति'** मानता है, तो कोई **'चिदात्मिका शक्ति'**, या फिर कोई उसे **'स्पन्दनात्मिका शक्ति'** मानता है। इस प्रकार आपकी माया के वश में होकर विद्वान् लोग परम पुरुष के विषय में भेद-ज्ञान की बातें करते हैं। वास्तविकता यह है कि सर्व-प्रथम **पर-ब्रह्म** स्त्री-पुरुष आदि उपाधि से रहित था। तदनन्तर, आपके हृदय में **जगत् की सृष्टि की इच्छा** जाग्रत् हुई। इसके बाद, आपकी वह **'इच्छा-शक्ति'** ही दो मूर्तियों—'स्त्री-पुरुष' के रूप में प्रकट हुई। मन्तव्य यह है कि **'पर-ब्रह्म'** आपका ही एक रूप है।

☐ देह-धारियों के शरीरों में स्थित **छः चक्रों में छः शिव** वास करते हैं। देह-धारियों के देहावसान के बाद वे प्रेतावस्था में रहते हैं और आपके आश्रय के बल पर वे **छहों शिव ईश्वर-भाव (परमेशत्व) को प्राप्त** कर लेते हैं। अतः **हे शिवे!** वास्तविक ईश्वरत्व शिव में नहीं, अपितु आप में ही है। समग्र देवता आपके **श्री-चरणों** में नत-मस्तक रहते हैं। आप हम पर प्रसन्न हों।

(**श्रीमहा-भागवत उप-पुराण,** प्रथम अध्याय, पृष्ठ ५-८ से संग्रहीत। **शाक्त-तन्त्र-प्रतिपादक** उक्त **श्रीमहा-भागवत उप-पुराण** (हिन्दी-अनुवाद-सहित) उपलब्ध है। **मूल्य २५०-०० भेजकर 'कल्याण मन्दिर प्रकाशन, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज-२११००६** से मँगाया जा सकता है।)

कौल-कल्पतरु चण्डी मासिक (हिन्दी) के स्वामित्व तथा तत्सम्बन्धी विवरण

१-प्रकाशन का स्थान	प्रयाग
२-प्रकाशन की अवधि	मासिक
३-मुद्रक का नाम	श्री ऋतशील शर्मा
पता	परा वाणी आध्यात्मिक शोध संस्थान, प्रयाग-६
४-प्रकाशक का नाम	श्री ऋतशील शर्मा
राष्ट्रीयता	भारतीय
५-सम्पादक का नाम	श्री ऋतशील शर्मा
राष्ट्रीयता	भारतीय

६- उन व्यक्तियों के नाम और पते जो इस पत्रिका के मालिक या साझेदार हैं या जो उसकी पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हैं। श्री ऋतशील शर्मा

मैं, ऋतशील शर्मा, घोषित करता हूँ कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही हैं। —ऋतशील शर्मा (प्रकाशक)

साधक का संवाद

६. नया अनुभव

(१)

लोग यात्रा से घबराते हैं, परन्तु मुझे यात्रा में सुख मिलता है और सो भी लम्बी यात्राओं में। उस दिन **मिश्र जी** ने कहा कि **मैसूर** में चन्दन की लकड़ी की किसी प्रकार व्यवस्था हो जाए, तो उसके तेल निकालने का कारखाना खोला जा सकता है। आखिर में **मैसूर** जाने का विचार पक्का हो गया। मेरे एक **मदरासी** मित्र अपने घर जा रहे थे। उन्हीं के साथ चलने का निश्चय हुआ। ठीक यात्रा के समय एक ऐसी अड़चन आ पड़ी कि **मिश्र जी** का जाना तो असम्भव हो गया और अकेले मुझे ही जाना पड़ा। पहले भी मैं **मदरास** आ-जा चुका हूँ, इससे मुझे उस ओर जाने में जरा भी झिझक नहीं हुई, उल्टा मुझे प्रसन्नता ही हुई। **दक्षिण भारत** मुझे प्रत्येक बार अच्छा लगा है। उस भव्य और विशाल मन्दिरों के देश में आज भी **हिन्दू-धर्म** अपने पूर्ण गौरव के साथ विद्यमान है। फलतः मैं ठीक समय पर अपनी इस सुखद यात्रा के लिए चल पड़ा। स्टेशन पर उन **मदरासी** मित्र से भी भेंट हो गई। एक ही डिब्बे में हम दोनों जा बैठे। गाड़ी ठीक समय पर छूट गई।

कलकत्ते से **मदरास** तक हम बराबर चले ही गए। मार्ग में कहीं नहीं ठहरे। **मदरास** से हम **मैसूर** गए और वहाँ लोगों से मिलकर लकड़ी के सम्बन्ध में बातचीत की। कई दिन की दौड़-धूप करने के बाद पता लगा कि लकड़ी किस भाव पर मिल सकती है। मैंने हिसाब लगाकर देखा कि उस भाव के अनुसार लकड़ी खरीदकर ले जाने पर तेल बहुत मँहगा पड़ेगा और लाभ के स्थान में हानि ही होगी। मैंने सारा विवरण लिखकर **मिश्र जी** को भेज दिया और वहाँ के सुन्दर स्थानों की सैर-सपाटा करके मैं **मदरास** लौट आया।

वहाँ पहुँचने पर मैं अपने उन **मदरासी** सज्जन के ही यहाँ फिर ठहरा। एक-दो दिन वहाँ रहने के बाद मैं **मीनाक्षी** के दर्शन करने के लिए **मदुरा** गया। मेरे मित्र उक्त **मदरासी** सज्जन ने मुझे **मदुरा** के अपने एक मित्र के नाम चिट्ठी लिख दी थी। **मदुरा** पहुँचने पर मैं उनके घर गया। उन्होंने मुझे बड़े आदर से लिया और अपने घर में ही ठहराया।

मदुरा के ये **मदरासी** सज्जन सकुटुम्ब **उत्तर भारत** में रह चुके थे और **हिन्दी** जानते थे। वे ब्राह्मण थे। केवल पति-पत्नी घर में थे। लड़का **मुम्बई** में नौकर था और उसकी पत्नी आदि उसके साथ थे। ब्राह्मण देवता का नाम था— **मुथू स्वामी**।

दूसरे दिन **मुथू स्वामी** के साथ जाकर मैंने **मीनाक्षी जी** के दर्शन किए। उनके मन्दिर और मन्दिर के भीतर उनकी प्रतिमा को देखकर कौन ऐसा व्यक्ति होगा, जो आश्चर्य से चकित न रह जायगा? **दक्षिण भारत** के ये मन्दिर वास्तव में **विश्वकर्मा** के ही बनाए जान पड़ते हैं और यही कारण है कि उनमें जाग्रत् देवताओं के दर्शन मिलते हैं। **माँ** के दर्शन का मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उस दिन मैं चुपचाप ही रहा। भोजन आदि से जब मैं छुट्टी पा गया, **मुथू स्वामी** मेरे पास आए और बातचीत करने लगे। अन्त में पूछा कि—अब आपका क्या प्रोग्राम है?

मैंने कहा—**शाक्त-धर्म** का यहाँ खासा प्रचार जान पड़ता है। मैं यहाँ के **शाक्तों** से मिलकर बातचीत करना चाहता हूँ।

मुथू स्वामी ने हँसकर कहा—**शाक्त** तो मैं भी हूँ। आप कैसे **शाक्त** से मिलना चाहते हैं? क्या साधु-महात्मा से?

'दोनों से। मैं जानना चाहता हूँ कि यहाँ की **साधना-प्रणाली** कैसी है?'

'यह सब तो मैं ही बता दूँगा। यह पहले ही बता देना चाहता हूँ कि यहाँ **उत्तर-भारत** के **शाक्तों** की **पूजा-प्रणाली** का प्रचार नहीं है। हम लोग **दक्षिण मार्ग** से ही अपने **इष्ट-देवता** का पूजन करते हैं।'

'मैं यही सब देखता हूँ कि आप लोग वह सब किस प्रकार करते हैं। मैंने सुना है कि **स्वामी शङ्कराचार्य** ने **शाक्त-धर्म** का भी सुधार किया है, परन्तु उनका वह **संस्कृत शाक्त-धर्म 'दक्षिण'** में ही प्रचलित हो सका।'

'**बौद्धों** और **जैनों** के विरोध को शान्त करना था। **शङ्कर** ने **वैदिक धर्म** का परिष्कृत रूप में प्रचार किया है, तो यह काम करके उन्होंने **धर्म** की रक्षा ही की है। **शङ्कर** या उनके पूर्व-वर्ती आचार्यों ने कुछ ऐसी बातें निकाल दी हैं, जिनका लोक में विरोध था। यह उसी सुधार का परिणाम है कि आज **वैदिक धर्म** देश में फैला हुआ है। क्या अपने इस रूप में भी वह आज हमें देखने को मिलता, यदि हम अपने **धर्म** में देश-काल के अनुसार सुधार न करते? वह भी **शाक्त-धर्म** की तरह कुछ पुरातन-पन्थियों के यहाँ छिपा पड़ा होता!'

'तो आप **धर्म** के इस विकृत रूप को श्रेयस्कर समझते हैं?'

'न समझेंगे, तो करेंगे क्या? हम लोगों का मनोभाव ही वैसा हो गया है! इसमें सन्देह नहीं कि **बौद्धों** के लोक-व्यापी प्रभाव को विनष्ट करने में तत्कालीन धर्माचार्यों ने विलक्षण तथा महान् प्रयत्न किया था। उसका अपना एक इतिहास ही अलग है?'

'वह इतिहास कैसा है?'

'इसके लिए संस्कृत-साहित्य के परिष्कृत रूप का बारीकी से अध्ययन करना होगा। कलि-वर्ज्य-प्रकरण की रचना से इसका प्रारम्भ होता है। इस काल में और इस प्रकार लोक-मत के अनुसार **धर्म** का सुधार किया गया। यह सारा महान् कार्य किन लोगों ने किया, इसका कोई पता नहीं। उनका यह कितना महान् त्याग है! अपना नाम तक सामने नहीं आने दिया! और काम इतने महत्त्व का किया कि **धर्म** की रक्षा ही नहीं की, **विरोधी धर्म** को हटाकर तथा उसे प्रभाव रहित कर **वैदिक धर्म** को पूर्व-वत् व्यापक बना दिया! यह कितने महत्त्व की बात है! इसका इतिहास यदि खोज करके लिखा जाय, तो आप जान सकेंगे कि **बौद्धों** के अभ्युदय के समय के हमारे ये धर्माचार्य कितने दूर-दर्शी और कार्य-कुशल थे!'

'तो भी मैं जरूर कहूँगा कि उनका यह समझौते का प्रयत्न **वैदिक धर्म** के लिए घातक ही सिद्ध हुआ है। **वेद** की **संहिताएँ, ब्राह्मण-ग्रन्थ, सूत्र** आदि हिन्दू के जीवन में आज अपना क्या प्रभाव डालते हैं, यह आप भी जानते हैं।'

'आप तो दुराग्रह कर रहे हैं। आपको यह जानना चाहिए कि एक बार को छोड़कर और कभी इस देश के **वैदिकों** ने **धर्म** के क्षेत्र में हठ-धर्मी से काम नहीं लिया और जैसा देश-काल देखा है, उन्होंने उसके अनुसार अपने **धर्म** में काट-छाँट कर ली है। यह इसी समझौते

का परिणाम है कि वह आज भी जीवित है। वह **गायत्री मन्त्र,** जो पहले-पहल **महर्षि विश्वामित्र** को प्राप्त हुआ था, आज भी उसी रूप में सारे देश को ज्ञात और प्राप्त है। यह उनकी महानता का ही बोधक है। मैं आपकी बात मानता हूँ, पर लोक-मत सदैव प्रबल रहा है और जब जिसने उससे टक्कर ली है, उसे नीचा देखना पड़ा है! **शङ्कर 'शाक्त-मत'** अर्थात् **तन्त्र-मत** के महत्त्व को जानते थे। इसी से उन्होंने अपने **मठों** में उसे सबसे अधिक महत्त्व का स्थान दिया, परन्तु दिया **अनुकल्पों** के साथ, विशेषकर इसलिए कि वे संन्यासी थे।'

'परन्तु उससे शास्त्र की उपेक्षा हुई है।'

मुथू स्वामी ने कहा—मैं आपकी बात मानने को तैयार नहीं हूँ। **हिन्दू महात्मा** 'शास्त्र' की अवहेलना कदापि नहीं कर सकते। फिर **आद्य शङ्कराचार्य** कैसे करेंगे? उन्होंने **'वैदिक धर्म'** की पुनः स्थापना की है और **शास्त्रों का गौरव** स्थापित किया है।

मैंने कुछ तेज होकर कहा— यदि **वैदिक धर्म** की पुनः स्थापना हुई है और वह अपने मूल रूप में है, तो पहले की भाँति **यज्ञों में पशु-बलि** क्यों नहीं होती और **मांसादि** का प्रयोग **पितृ-श्राद्धों** में क्यों नहीं किया जाता? आज के **वैदिक धर्म** में उन बातों का प्रचलन क्यों नहीं है, जिनका विरोध करने के लिए **जैन-धर्म** और **बौद्ध-धर्म** का जन्म हुआ था? मैं तो यही कहूँगा कि आज का **वैदिक धर्म** पहले जैसा नहीं है, किन्तु ऐसे परिवर्तित रूप में है कि उसके विरोधी पहले की भाँति उसका विरोध न करें।

'आप तो उलटी ही बात कहेंगे। अरे भाई, हमारे **शास्त्र** में कलि-युग में हिंसा-परक **यज्ञों** तथा **श्राद्धों** का निषेध है।'

'यही तो मैं भी कह रहा हूँ, किन्तु अपने ढङ्ग से कह रहा हूँ। **धर्म** के आचार्यों ने देखा कि इस नए युग में वह सब नहीं चलने पाएगा। उन्होंने उनका कलि-युग के लिए निषेध कर दिया, परन्तु **शाक्त-धर्म** के आचार्यों ने अपने धर्म में परिवर्तन करना नहीं स्वीकार किया और उसे **गोपनीयता** का जामा पहना कर वे जैसा-का-तैसा जारी किए रहे, परन्तु इधर **दक्षिण** में आप लोगों ने उसे भी आधुनिक **वैदिक** रूप दे डाला है। आप लोगों की यह **सपर्या** और **पूजा-अर्चा 'दक्षिणाचार'** के आगे पैर बढ़ाने का साहस कहाँ कर पाती है, यद्यपि उसका अन्तिम रूप **कौलाचार** ही माना गया है? आपके इस **श्रीविद्या** के देश में कहाँ कितने **कौल** हैं, क्या यह बताने की कृपा करेंगे?'

'आपका यह तर्क कुतर्क है। इसका उत्तर मेरे पास नहीं है, परन्तु आज सन्ध्या-समय मैं आपको **नाथ जी** के पास ले चलूँगा। आपका समाधान वे कर देंगे।'

मैंने पूछा—ये **नाथ जी** कौन हैं?

मुथू स्वामी ने कहा—वे एक विरक्त साधु हैं। बड़े भारी विद्वान् हैं। कभी-कभी यहाँ आ जाते हैं। प्रायः भ्रमण किया करते हैं।

मैंने कहा—**धर्म** के सम्बन्ध में मैं वाद-विवाद किसी से नहीं करता। साधु-सन्तों से तो और भी नहीं। यह तो बात चल पड़ी थी, इससे इतनी बातें हो गईं, परन्तु **नाथ जी** के दर्शन जरूर करूँगा।

मुथू स्वामी ने गम्भीर होकर कहा—'यह वाद-विवाद नहीं है, तो क्या है? यह मार्ग रहस्य-पूर्ण है। यह न **ईसाई धर्म** है और न **मुसलमान धर्म** है; जो इसका गली-गली प्रचार हो। **आगम-ग्रन्थों** में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि यह

'गुप्त' रखा जाए, किसी पर इसका रहस्य प्रकट न किया जाए। फिर यह ऐसा है भी नहीं कि सभी कोई इसके अधिकारी हों। यह **'योगिनामप्यगम्यः'** है।' यह कहकर वे चुप हो रहे।

मैंने कहा—आप कहते तो ठीक हैं, लिखा भी वही है, जो आपने कहा है, परन्तु उसका जो अर्थ आपने किया है, उससे मैं सहमत नहीं हूँ। यदि इस तरह इसे **गोपनीय** रखना होता, तो **सदाशिव** ने इसकी इतने विस्तृत रूप में व्याख्या न की होती और न इसका चारों वर्णों के लोगों को ही नहीं, चाण्डालों तक को अधिकारी बनाया होता। फिर उन्होंने इसको **कलि-काल** का **युग-धर्म** कहकर लोक-कल्याण के लिए उपदेश किया है। ऐसी दशा में इसे **गुप्त** रखने का आशय यह है कि जब इस **विद्या** को प्राप्त करो, तब इसे **गुप्त** रखो, उसी भाँति जैसे लोग अपनी धन-दौलत छिपाकर रखते हैं। **गुप्त** रखने का अर्थ यही है कि इसे सबसे अधिक मूल्यवान् समझो। और जो आपने उसे इतना गूढ़ बताया कि योगियों के लिए भी अगम्य है, अर्थात् साधारण लोगों की गति के बाहर की वस्तु है, सो मैं इस उक्ति से भी मत-भेद रखता हूँ। पहले तो यह उक्ति एक विशेष अवस्था की है, दूसरे इसका अर्थ केवल बड़ाई मात्र है। मैं भी जानता हूँ, और आप भी जानते हैं कि कितने ही साधारण लोग, जो **योग** और **वेदान्त** के ज्ञान से सर्वथा कोरे रहे हैं, इस **मार्ग की दीक्षा** लेकर अपने कल्याण-साधन में सफल मनोरथ हुए हैं और हो भी रहे हैं। तब **अगम्यता** का अर्थ **दुर्गमता** वा **गूढ़ता** करना कैसे ठीक होगा?

मुथू स्वामी बोले—मेरे और आपके विचार में बड़ा अन्तर है। अच्छा, यदि आपका ही यह अर्थ ठीक है, तो इसको **गुप्त** रखने तथा इसे **गूढ़** समझने की जो **परम्परा** है, उसके सम्बन्ध में आप क्या कहते हैं?

मैंने कहा—इस **परम्परा** का अर्थ स्पष्ट ही है। विरोधियों का प्रभाव बढ़ जाने पर कभी ऐसा समय आया होगा, जब इस **धर्म** के आचार्यों ने **धर्म** की रक्षा के लिए **गूढ़** बताने और **गुप्त** रखने की चाल डाली होगी। यह तो आप जानते ही हैं कि **वैदिक यज्ञों** का किसी समय कैसा भयानक विरोध हुआ था। यहाँ तक कि वे बन्द ही हो गए। यही नहीं, **वैदिकों** को अपने धार्मिक कृत्यों में लोक-रुचि के अनुसार बड़े-बड़े परिवर्तन करने पड़े।

खीझकर **मुथू स्वामी** ने कहा—आप तो बस उल्टी ही कहेंगे! कहाँ **यज्ञ** बन्द हो गए? आज भी बराबर **यज्ञ** हो रहे हैं। और परिवर्तन कहाँ कैसा हुआ है? यह आपका बहुत अनुचित आक्षेप है। **धर्म** में परिवर्तन कैसा?

मैंने कहा—एक आध **सूत्र-ग्रन्थ** एक बार फिर पढ़िए। आप ही पता लग जायगा कि **वैदिक-धर्म** का हम कितने परिवर्तित रूप में पालन कर रहे हैं! जीवन-सम्बन्धी **संस्कारों** आदि पर भले ही उसकी छाप पड़ती दिखाई दे जाय, पर परमार्थ की साधना में आज **वैदिक धर्म** को कौन पूछता है? और **यज्ञ!** क्या वे **यज्ञ** आज **वैदिक धर्म** के अभिमानी करने का साहस कर सकते हैं, जिनकी निन्दा आज दिन भी होती रहती है? हाँ, हमारे **शाक्त-धर्म** के आचार्यों ने अपने **धर्म** में किसी तरह का फेर-फार करना स्वीकार नहीं किया और वे अपने शास्त्रादेशों पर अटल रहे। **अनुकल्प-विकल्पों** की भावना यद्यपि उसमें भी घुस आई है, परन्तु मूल तत्त्वों का त्याग नहीं ही किया गया। उसने **गुप्त** हो जाना और लोगों की दृष्टि में **गूढ़** बन जाना तो स्वीकार कर लिया, परन्तु अपने अस्तित्व को नहीं मिटने दिया और यह

आज भी अपने असल रूप में विद्यमान है।

क्रुद्ध-सा होकर **मुथू स्वामी** बोले—तो क्या **वैदिक धर्म** का अस्तित्व मिट गया है? हम सब लोग **अवैदिक** हैं? एक **शाक्त** ही अपने **धर्म** के पक्के हैं?

मैंने कहा—मैंने यह कब कहा कि **वैदिक धर्म** का अस्तित्व मिट गया। मैंने तो केवल यही कहा कि लोक में उसकी जिन बातों का विरोध हुआ, उन्हें या तो बन्द कर देना पड़ा या उनमें लोक-रुचि के अनुसार परिवर्तन करना पड़ा है। उदाहरण के लिए **ब्राह्मण-ग्रन्थों** तथा **गृह्य-सूत्रों** में वर्णित बहुत से **यज्ञ** बन्द हो गए और **पितृ-श्राद्ध** में परिवर्तन करना पड़ा। बाकी बातें जारी रहीं तथा नई-नई आती गईं। आज का **वैदिक धर्म** ऐसा ही परिवर्तित तथा संशोधित **धर्म** है, परन्तु **शाक्त** जैसे पहले थे, वैसे आज भी हैं। हाँ, आपके प्रान्त में **अनुकल्पों** ने जरूर महत्त्व प्राप्त कर लिया है, परन्तु अन्य प्रान्तों में वह अपने असल स्वरूप में ही विद्यमान है।

'फिर वही आक्षेप! **अनुकल्पों** का तन्त्र में विधान किया गया है और वह भी **ब्राह्मणों** के लिए। हमारे प्रान्त में **शाक्त-धर्म 'आगमों'** का ठीक-ठीक अनुसरण करता है। **दीक्षा, अभिषेक** आदि सभी सविधि किए जाते हैं। **उपासना** में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं होती।'

मैंने कहा—मैं आक्षेप नहीं करता हूँ। जो बात है, वही कहता हूँ। **आगम** मैंने भी देखे हैं। **अनुकल्प 'अनुकल्प'** ही हैं और **मूल-तत्त्व 'मूल-तत्त्व'** ही हैं। **मूल-तत्त्व** की अप्राप्ति पर ही **अनुकल्प** का विधान किया गया है, **मूल-तत्त्व** को स्थानच्युत करने को नहीं। आपके प्रान्त में उसने **मूल-तत्त्वों** को उनके अधिकार से वञ्चित कर दिया है, परन्तु अन्य प्रान्तों में वह अपने स्थान पर ही रहा और आज भी है। और उनके **धर्म** के ऐसे आग्रह को इस प्रान्त के **शाक्त** अनुचित समझते हैं!

मुथू स्वामी ने कुछ तीखे स्वर में कहा—हम लोग उसे **धर्म** का आग्रह नहीं, दुराग्रह समझते हैं। जब शास्त्र-निर्दिष्ट **मूल-तत्त्व** अलभ्य हैं, तब **अनुकल्प** का आश्रय लेना पड़ रहा है। अन्य प्रान्तों में जो **मूल-तत्त्व** ग्रहण किए जाते हैं, क्या आप कह सकते हैं कि वे शास्त्रानुसार हैं?

इस बातचीत को मैंने बन्द कर देना ही उचित समझा। मैंने कहा—हम दोनों के दृष्टि-कोण में भारी भेद है, परन्तु यह कम लाभ की बात नहीं हुई कि हम दोनों ने एक दूसरे को जान लिया। अच्छा! **नाथ जी** के पास कब चलेंगे?

'सन्ध्या-समय चलूँगा'—यह कहकर वे घर के भीतर चले गए।

सन्ध्या-समय मैं **मुथू स्वामी** के साथ **नाथ जी** के दर्शन करने गया। वे शहर के बाहर श्मशान में मिले। एक छोटी-सी गन्दी टेकरी थी। जहाँ-तहाँ दो-एक बेल के वृक्ष थे। उन्हीं में से एक पेड़ के नीचे वे बैठे थे। देह भर में भस्म लगी हुई थी। सफेद जटाएँ और लम्बी दाढ़ी से जान पड़ता था कि वे सत्तर के होंगे, पर देह से वे सबल जान पड़ते थे। एक लँगोटी लगाए थे। उसके सिवा उनके पास और कुछ नहीं था। हम दोनों उन्हें प्रणाम कर वहीं जमीन पर बैठ गए।

उन्होंने हमारे अभिवादन का कुछ भी उत्तर न दिया। जैसे-के-तैसे ही चुपचाप बैठे रहे। कुछ देर के बाद जब बोले। तब **तमिल** में, जिसे मैं नहीं समझ सका। **मुथू स्वामी** से उनकी बातचीत होती रही। अन्त में उन्होंने मेरी ओर मुँह किया और मुझसे हिन्दी में बोले। उन्होंने कहा—मैं **काशी-प्रयाग** में वर्षों रहा हूँ और मुझे **उत्तर भारत**

बहुत प्रिय है। **मुथू स्वामी** ने बताया कि आपको यहाँ के **शाक्तों** की **साधना** के सम्बन्ध में कुछ कहना है, यहाँ तक कि आप उनकी **साधना** को विकृत मानते हैं। ऐसी धारणा तो ठीक नहीं है। **उपासना** में देश, काल और सामर्थ्य के भी अनुसार सदा भेद होता रहा है।

मैंने विनम्रता के साथ निवेदन किया—महाराज, आप जो कहते हैं, यथार्थ है। पर मैंने कुछ दूसरी ही बात कही थी।

'आपने कहा है कि यहाँ **अनुकल्पों** का महत्त्व है और वह ठीक नहीं है, परन्तु उनका महत्त्व केवल उन्हीं के लिए है, जो वहीं तक चल सकते हैं। यहाँ ऐसे साधकों का क्या काम है, जो **द्रव्यों** को मूल रूप में ही ग्रहण करते हैं। **शङ्कर स्वामी** की इस व्यवस्था का ही यह शुभ परिणाम हुआ है कि **जगदम्बा** की पूजा-अर्चा यहाँ सविधान बराबर होती रहती है। यहाँ **अधिकारी-भेद** का पूरा ध्यान रखा गया है, अन्यथा **उत्तर भारत** की भाँति यहाँ से भी **शाक्त-धर्म** का उन्मूलन हो गया होता। यदि **अनुकल्पों** का आश्रय न लिया गया होता, तो आज आपको यहाँ लोगों के माथों पर **लाल बिन्दी** लगी हुई न दिखती। आपके यहाँ **मूल-द्रव्यों** का आग्रह किया गया। फल क्या हुआ?'

इतने में **मुथू स्वामी** कुछ कह पड़े, और उनसे **महात्मा जी** की **तमिल** में बातचीत होने लगी, परन्तु उनका शीघ्र ही समाधान कर **महात्मा जी** ने फिर मेरी ओर मुँह किया।

मैंने हाथ जोड़कर कहा—आपका मैं काफी समय ले चुका हूँ।

'नहीं, नहीं, यह भी कोई बात है! फिर आप तो **धर्म** की ही बात करते हैं।'

महात्मा जी के प्रोत्साहन से मैंने कहा—महाराज, जब आपकी आज्ञा है, तब एक और प्रार्थना है। हमारे **शाक्त-धर्म** में किस बात की प्रधानता है? **ज्ञान** की या **भक्ति** की या **योग** की, किसकी है?

इस बार **महात्मा जी** ठहाका मारकर हँस पड़े। जब हँसना बन्द हुआ, तब आँसू पोंछकर बोले—

'**शाक्त-धर्म ज्ञान-मार्ग-प्रधान** है या **भक्ति-मार्ग-प्रधान** या **योग-मार्ग-प्रधान** है, यह सब मैं क्या जानूँ! न मैं **ज्ञानी** हूँ, न **भक्त** हूँ और न **योगी** हूँ। मैं तो केवल **माई-माई** भर कहना जानता हूँ।' यह कहकर **महात्मा जी** चुप हो गए।

मैंने समझा कि प्रश्न से **महात्मा जी** कदाचित् असन्तुष्ट हो गए हैं, क्योंकि उस समय उनकी वैसी ही भाव-भङ्गी हो गई थी, अतएव मैंने अति विनय-पूर्वक कहा—**महाराज,** मैंने जिज्ञासा के भाव से ही यह प्रश्न किया है। इसके सिवा और कोई बात नहीं।

महात्मा जी इस पर फिर खिलखिलाकर हँस पड़े। उन्होंने कहा—**भैया,** मैं सच ही कहता हूँ कि **माई-माई** भर कहना जानता हूँ। जब से **मा-मा** कहने की **दीक्षा** मिली है, उन्हीं का नाम लिया करता हूँ ताकि इस लोक और पर-लोक में भी वह बराबर रक्षा करती रहे। मेरी यही चेष्टा रहती है कि **मा** को एक क्षण के लिए भी न भूलूँ। **गुरुदेव** ने यही आदेश किया था और जो **पूजा-अर्चा** बताई है, उसका भी यही उद्देश्य है कि हर समय **मा** का ही होकर रहूँ। इसे चाहे **ज्ञान-मार्ग** कहो, चाहे **भक्ति-मार्ग** और चाहे **योग-मार्ग,** पर मैं यह सब नहीं जानता। कह सकता हूँ तो केवल इतना ही कि यह **मातृ-मार्ग**

है और इसका आश्रय करनेवाला **पुत्र** बनकर **मा** को पाता है।

महात्मा जी ने यह सब एक साँस में कह डाला, जैसे कोई बच्चा अपना पाठ सुनाता है! उनकी वह **बाल-मुद्रा** देखकर मैं चकित रह गया। मैंने यही कहा—**महात्मा जी,** बातचीत होने पर ऐसे प्रश्न उठते हैं। उन पर शास्त्रीय दृष्टि-कोण से विचार होता है, अन्यथा ऐसी ढिठाई न करता।

'मैंने **तन्त्र-ग्रन्थों** का कहाँ अध्ययन किया है, जो अधिकार-पूर्वक आपकी बातों का उत्तर दूँ?'

'इतने बड़े **कुलावधूत** जब इस प्रकार कहते हैं, तब हमारे सरीखे लोगों का कौन समाधान करेगा?'

महात्मा जी थोड़ी देर तक ध्यानस्थ रहे। उसके बाद गम्भीर स्वर में कहने लगे—ऐसे शास्त्रीय पचड़ों में हम लोग नहीं पड़ते हैं। हमें तो अपनी **साधना** से मतलब रहता है। **पद्धति** के अनुसार **माई-माई** कहते हुए और सुख-दुःख भोगते हुए जीवन को धीरता-पूर्वक व्यतीत करते रहते हैं। हमें न तो **ज्ञान** से मतलब है, न **भक्ति** से और न **योग** से। **माई** के दरबार में पुत्रों को **ज्ञानी, भक्त** या **योगी** बनने की जरूरत ही कहाँ? ऐसी दशा में मैं तुम्हारे प्रश्न का कैसे समाधान करूँ?

मैंने कहा—मैं आपकी बात को मानता हूँ, परन्तु आप तो तपे हुए **साधक** हैं, अपने अनुभव के बल पर कुछ-न-कुछ तो कह ही सकते हैं।

'सो तो मैंने बता दिया है, परन्तु आपको सन्तोष नहीं हुआ। अब मैं यह कहूँगा कि **शाक्त-धर्म** में **ज्ञान, भक्ति** और **योग** आदि के चरम रूप का दर्शन मिलता है, परन्तु ऐसी भारी बात मैं कैसे कह सकता हूँ? न तो इस तरह का अनुभव हुआ है और न ऐसा कहने का अभ्यास रहा है।'

'परन्तु **महाराज,** आप जैसे महात्माओं को कहते सुना है कि **तन्त्र** अनेक विद्याओं का भण्डार है और उसमें **ज्ञान, वैराग्य, योग, भक्ति** आदि सभी विषयों का निरूपण किया गया है।'

'तो मैंने ही कब कहा कि **तन्त्रों** में इन विषयों का जिक्र नहीं है? परन्तु आप तो **शाक्त-धर्म** की बातें कर रहे थे।'

'**शाक्त-धर्म** और **तन्त्र-धर्म** एक वस्तु के दो नाम भर हैं, उनमें भेद ही कहाँ है?'

'मैं ऐसा नहीं समझता। मैं तो यह कहूँगा कि **तन्त्रों** में अन्य नाना विषयों का जहाँ निरूपण है, वहाँ **शाक्त-धर्म** उसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय है और उस **शाक्त-धर्म** में केवल **माई-माई** की चर्चा है।'

काफी देर हो गई थी। **मुथू स्वामी** बार-बार अँगड़ाई ले रहे थे। मैंने **महात्मा जी** से कहा—अब आज्ञा दीजिए। बहुत देर हो गई है।

महात्मा जी ने कहा—अच्छा, अच्छा अब कब भेंट होगी? आपसे तो बातें करने को बहुत जी चाहता है।

मैंने कहा—'**महाराज,** अष्टमी तक अभी यहाँ हूँ। सेवा में फिर हाजिर होऊँगा।' यह कहकर मैंने उनको प्रणाम किया और हम दोनों वहाँ से चले आए।

(क्रमशः)

* * *

श्रीसूर्य-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ ह्रीं अरुणाय नमः।
ॐ ह्रीं शरण्याय नमः।
ॐ ह्रीं करुणा-रस-सिन्धवे नमः।
ॐ ह्रीं असमान-बलाय नमः।
ॐ ह्रीं आर्त-रक्षकाय नमः।
ॐ ह्रीं आदित्याय नमः।
ॐ ह्रीं आदि-भूताय नमः।
ॐ ह्रीं अखिलागम-वेदिने नमः।
ॐ ह्रीं अच्युताय नमः।
ॐ ह्रीं अखिलज्ञाय नमः॥१०॥
ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः।
ॐ ह्रीं इनाय नमः।
ॐ ह्रीं विश्व-रूपाय नमः।
ॐ ह्रीं इज्याय नमः।
ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः।
ॐ ह्रीं भानवे नमः।
ॐ ह्रीं इन्दिरा-मन्दिराप्राय नमः।
ॐ ह्रीं वन्दनीयाय नमः।
ॐ ह्रीं ईशाय नमः।
ॐ ह्रीं सु-प्रसन्नाय नमः॥२०॥
ॐ ह्रीं सुशीलाय नमः।
ॐ ह्रीं सु-वर्चसे नमः।
ॐ ह्रीं वसु-प्रदाय नमः।
ॐ ह्रीं वसवे नमः।
ॐ ह्रीं वासुदेवाय नमः।
ॐ ह्रीं उज्ज्वलाय नमः।
ॐ ह्रीं उग्र-रूपाय नमः।
ॐ ह्रीं ऊर्ध्वगाय नमः।
ॐ ह्रीं विवस्वते नमः।
ॐ ह्रीं उद्यत्किरण-जालाय नमः॥३०॥
ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः।
ॐ ह्रीं ऊर्जस्वलाय नमः।
ॐ ह्रीं वीराय नमः।
ॐ ह्रीं निर्जराय नमः।
ॐ ह्रीं जयाय नमः।
ॐ ह्रीं ऊरु-द्वय-भाव-रूप-युक्त-सारथये नमः।
ॐ ह्रीं ऋणि-बन्धाय नमः।
ॐ ह्रीं रुग्-हन्त्रे नमः।
ॐ ह्रीं ऋक्ष-चक्र-चराय नमः।
ॐ ह्रीं ऋजु-स्वभाव-चित्ताय नमः॥४०॥
ॐ ह्रीं नित्य-स्तुत्याय नमः।
ॐ ह्रीं ऋकार-मातृका-वर्ण-रूपाय नमः।
ॐ ह्रीं उज्ज्वलत्-तेजसे नमः।
ॐ ह्रीं ऋक्षादि-नाथ-मित्राय नमः।
ॐ ह्रीं पुष्कराक्षाय नमः।
ॐ ह्रीं लुप्त-दन्ताय नमः।
ॐ ह्रीं शान्ताय नमः।
ॐ ह्रीं कान्तिदाय नमः।
ॐ ह्रीं घनाय नमः।
ॐ ह्रीं कनत्-कनक-भूषाय नमः॥५०॥
ॐ ह्रीं खद्योताय नमः।
ॐ ह्रीं ऊनिताखिल-दैत्याय नमः।

ॐ ह्रीं सत्यानन्द-स्वरूपिणे नमः।
ॐ ह्रीं अप-वर्ग-प्रदाय नमः।
ॐ ह्रीं आर्त-शरण्याय नमः।
ॐ ह्रीं एकाकिने नमः।
ॐ ह्रीं भगवते नमः।
ॐ ह्रीं सृष्टि-स्थित्यन्त-कारिणे नमः।
ॐ ह्रीं गुणात्मने नमः।
ॐ ह्रीं घृणि-भृते नमः॥६०॥
ॐ ह्रीं बृहते नमः।
ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः।
ॐ ह्रीं ऐश्वर्यदाय नमः।
ॐ ह्रीं शर्वाय नमः।
ॐ ह्रीं हरिदश्वाय नमः।
ॐ ह्रीं शौरये नमः।
ॐ ह्रीं दश-दिक्-सम्प्रकाशाय नमः।
ॐ ह्रीं भक्त-वश्याय नमः।
ॐ ह्रीं ऊर्जस्कराय नमः।
ॐ ह्रीं जयिने नमः॥७०॥
ॐ ह्रीं जगदानन्द-हेतवे नमः।
ॐ ह्रीं जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि-वर्जिताय नमः।
ॐ ह्रीं उच्च-स्थान-समारूढ-रथस्थाय नमः।
ॐ ह्रीं असुरारये नमः।
ॐ ह्रीं कमनीय-कराय नमः।
ॐ ह्रीं अब्ज-वल्लभाय नमः।
ॐ ह्रीं अन्तर्बहिः-प्रकाशाय नमः।
ॐ ह्रीं अचिन्त्याय नमः।
ॐ ह्रीं आत्म-रूपिणे नमः।
ॐ ह्रीं अच्युताय नमः॥८०॥

ॐ ह्रीं अमरेशाय नमः।
ॐ ह्रीं परस्मै ज्योतिषे नमः।
ॐ ह्रीं अहस्कराय नमः।
ॐ ह्रीं रवये नमः।
ॐ ह्रीं हरये नमः।
ॐ ह्रीं परमात्मने नमः।
ॐ ह्रीं तरुणाय नमः।
ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः।
ॐ ह्रीं ग्रहाणांपतये नमः।
ॐ ह्रीं भास्कराय नमः॥९०॥
ॐ ह्रीं आदि-मध्यान्त-रहिताय नमः।
ॐ ह्रीं सौख्य-प्रदाय नमः।
ॐ ह्रीं सकल-जगतांपतये नमः।
ॐ ह्रीं सूर्याय नमः।
ॐ ह्रीं कवये नमः।
ॐ ह्रीं नारायणाय नमः।
ॐ ह्रीं परेशाय नमः।
ॐ ह्रीं तेजो-रूपाय नमः।
ॐ ह्रीं श्रीहिरण्य-गर्भाय नमः।
ॐ ह्रीं सम्पत्कराय नमः॥१००॥
ॐ ह्रीं इष्टार्थदाय नमः।
ॐ ह्रीं अनुप्रसन्नाय नमः।
ॐ ह्रीं श्रीमते नमः।
ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः।
ॐ ह्रीं भक्त-कोटि-सौख्य-प्रदायिने नमः।
ॐ ह्रीं निखिलागम-वेद्याय नमः।
ॐ ह्रीं नित्यानन्दाय नमः।
ॐ ह्रीं छाया-उषा-देवी-समेताय नमः॥१०८॥

श्रीसोम (चन्द्र) - अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ सौं श्रीमते नमः।
ॐ सौं शश-धराय नमः।
ॐ सौं चन्द्राय नमः।
ॐ सौं ताराधीशाय नमः।
ॐ सौं निशाकराय नमः।
ॐ सौं सुधा-निधये नमः।
ॐ सौं सदाऽऽराध्याय नमः।
ॐ सौं सत्पतये नमः।
ॐ सौं साधु-पूजिताय नमः।
ॐ सौं जितेन्द्रियाय नमः॥१०॥
ॐ सौं जयोद्योगाय नमः।
ॐ सौं ज्योतिश्चक्र-प्रवर्तकाय नमः।
ॐ सौं विकर्तनानुजाय नमः।
ॐ सौं वीराय नमः।
ॐ सौं विश्वेशाय नमः।
ॐ सौं विदुषां पतये नमः।
ॐ सौं दोषा-कराय नमः।
ॐ सौं दुष्ट-दूराय नमः।
ॐ सौं पुष्टि-मते नमः।
ॐ सौं शिष्ट-पालकाय नमः॥२०॥
ॐ सौं अष्ट-मूर्ति-प्रियाय नमः।
ॐ सौं अनन्ताय नमः।
ॐ सौं कष्ट-दारु-कुठाराय नमः।
ॐ सौं स्व-प्रकाशाय नमः।
ॐ सौं प्रकाशत्मने नमः।
ॐ सौं द्यु-चराय नमः।
ॐ सौं देव-भोजनाय नमः।
ॐ सौं कलाधराय नमः।
ॐ सौं काल-हेतवे नमः।
ॐ सौं काम-कृते नमः॥३०॥
ॐ सौं काम-दायकाय नमः।
ॐ सौं मृत्यु-संहारकाय नमः।
ॐ सौं अमर्त्याय नमः।
ॐ सौं नित्यानुष्ठानदाय नमः।
ॐ सौं क्षपाकाराय नमः।
ॐ सौं क्षीण-पापाय नमः।
ॐ सौं क्षय-वृद्धि-समन्विताय नमः।
ॐ सौं जैवातृकाय नमः।
ॐ सौं शुचये नमः।
ॐ सौं शुभ्राय नमः॥४०॥
ॐ सौं जयिने नमः।
ॐ सौं जय-फल-प्रदाय नमः।
ॐ सौं सुधा-मयाय नमः।
ॐ सौं सुर-स्वामिने नमः।
ॐ सौं भुक्तिदाय नमः।
ॐ सौं भद्राय नमः।
ॐ सौं भक्तानामिष्ट-दायकाय नमः।
ॐ सौं भक्त-दारिद्र-भञ्जनाय नमः।
ॐ सौं साम-गान-प्रियाय नमः।
ॐ सौं सर्व-रक्षकाय नमः॥५०॥
ॐ सौं सागरोद्-भवाय नमः।
ॐ सौं भयान्त-कृते नमः।

ॐ सौं भवित-गम्याय नमः।
ॐ सौं भव-बन्ध-विमोचकाय नमः।
ॐ सौं जगत्-प्रकाश-करणाय नमः।
ॐ सौं जगदानन्द-कारणाय नमः।
ॐ सौं निःसपत्नाय नमः।
ॐ सौं निराहाराय नमः।
ॐ सौं निर्विकाराय नमः।
ॐ सौं निरामयाय नमः॥६०॥
ॐ सौं भू-छायाऽऽच्छादिताय नमः।
ॐ सौं भव्याय नमः।
ॐ सौं भुवन-प्रतिपालकाय नमः।
ॐ सौं सकलार्ति-हराय नमः।
ॐ सौं सौम्य-जनकाय नमः।
ॐ सौं साधु-वन्दिताय नमः।
ॐ सौं सर्वागमज्ञाय नमः।
ॐ सौं सर्वज्ञाय नमः।
ॐ सौं सनकादि-मुनि-स्तुताय नमः।
ॐ सौं सित-छत्र-ध्वजोपेताय नमः॥७०॥
ॐ सौं सिताङ्गाय नमः।
ॐ सौं श्वेत-माल्याम्बर-धराय नमः।
ॐ सौं सित-भूषणाय नमः।
ॐ सौं श्वेत-गन्धानुलेपनाय नमः।
ॐ सौं दशाश्व-रथ-संरूढाय नमः।
ॐ सौं दण्ड-पाणये नमः।
ॐ सौं धनुर्धराय नमः।
ॐ सौं कुन्द-पुष्पोज्ज्वलाकाराय नमः।
ॐ सौं नयनाब्ज-समुद्-भवाय नमः।
ॐ सौं आत्रेय-गोत्रजाय नमः॥८०॥

ॐ सौं अत्यन्त-विनयाय नमः।
ॐ सौं प्रिय-दायकाय नमः।
ॐ सौं करुणा-रस-सम्पूर्णाय नमः।
ॐ सौं कर्कटक-प्रभवे नमः।
ॐ सौं चतुरस्र-समारूढाय नमः।
ॐ सौं अव्ययाय नमः।
ॐ सौं चतुराय नमः।
ॐ सौं दिव्य-वाहनाय नमः।
ॐ सौं विवस्वन्मण्डलाज्ञेय-वासाय नमः।
ॐ सौं वसु-समृद्धिदाय नमः॥९०॥
ॐ सौं महेश्वर-प्रियाय नमः।
ॐ सौं दान्ताय नमः।
ॐ सौं मेरु-गोत्र-प्रदक्षिणाय नमः।
ॐ सौं ग्रह-मण्डल-मध्यस्थाय नमः।
ॐ सौं ग्रसितार्काय नमः।
ॐ सौं द्विज-राजाय नमः।
ॐ सौं द्युतित-काय नमः।
ॐ सौं द्वि-भुजाय नमः।
ॐ सौं द्विज-पूजिताय नमः।
ॐ सौं औदुम्बर-नगावासाय नमः॥१००॥
ॐ सौं उदाराय नमः।
ॐ सौं रोहिणी-पतये नमः।
ॐ सौं नित्योदयाय नमः।
ॐ सौं मुनि-स्तुताय नमः।
ॐ सौं नित्यानन्द-फल-प्रदाय नमः।
ॐ सौं सकलाह्लादन-कराय नमः।
ॐ सौं पलाश-समिध-प्रियाय नमः।
ॐ सौं चन्द्रमसे नमः॥१०८॥

श्रीमङ्गल-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ मं मही-सुताय नमः।
ॐ मं महा-भागाय नमः।
ॐ मं मङ्गलाय नमः।
ॐ मं मङ्गल-प्रदाय नमः।
ॐ मं महा-वीराय नमः।
ॐ मं महा-शूराय नमः।
ॐ मं महा-बल-पराक्रमाय नमः।
ॐ मं महा-रौद्राय नमः।
ॐ मं महा-भद्राय नमः।
ॐ मं माननीयाय नमः॥१०॥
ॐ मं दया-कराय नमः।
ॐ मं मानदाय नमः।
ॐ मं अमर्षणाय नमः।
ॐ मं क्रूराय नमः।
ॐ मं ताप-पाप-विवर्जिताय नमः।
ॐ मं सु-प्रतीपाय नमः।
ॐ मं सु-ताम्राक्षाय नमः।
ॐ मं सुब्रह्मण्याय नमः।
ॐ मं धर्मात्मजाय नमः।
ॐ मं वक्तृ-सभादि-गमनाय नमः॥२०॥
ॐ मं वरेण्याय नमः।
ॐ मं वरदाय नमः।
ॐ मं सुखिने नमः।
ॐ मं वीर-भद्राय नमः।
ॐ मं विरूपाक्षाय नमः।
ॐ मं विदूरस्थाय नमः।
ॐ मं विभा-वसवे नमः।
ॐ मं नक्षत्र-चक्र-सञ्चारिणे नमः।
ॐ मं नक्षत्र-रूपाय नमः।
ॐ मं क्षात्र-वर्जिताय नमः॥३०॥
ॐ मं क्षय-वृद्धि-विनिर्मुक्ताय नमः।
ॐ मं क्षमा-युक्ताय नमः।
ॐ मं विचक्षणाय नमः।
ॐ मं अक्षीण-फलदाय नमः।
ॐ मं चक्षुर्गोचराय नमः।
ॐ मं शुभ-लक्षणाय नमः।
ॐ मं वीत-रागाय नमः।
ॐ मं वीत-भयाय नमः।
ॐ मं वीचि-विरावाय नमः।
ॐ मं विश्व-कारणाय नमः॥४०॥
ॐ मं नक्षत्र-राशि-सञ्चारिणे नमः।
ॐ मं नाना-भय-निकृन्तनाय नमः।
ॐ मं कमनीयाय नमः।
ॐ मं दया-साराय नमः।
ॐ मं कनत्-कनक-भूषणाय नमः।
ॐ मं भय-त्राणाय नमः।
ॐ मं भव्य-फलदाय नमः।
ॐ मं भक्ताभय-वर-प्रदाय नमः।
ॐ मं शत्रु-हन्त्रे नमः।
ॐ मं शमोपेताय नमः॥५०॥
ॐ मं शरणागत-पोषणाय नमः।
ॐ मं साहसिने नमः।

ॐ मं सद्-गुणाध्यक्षाय नमः।
ॐ मं साधवे नमः।
ॐ मं समर-दुर्जयाय नमः।
ॐ मं दुष्ट-दूराय नमः।
ॐ मं शिष्ट-पूज्याय नमः।
ॐ मं सर्व-कष्ट-निवारणाय नमः।
ॐ मं दुश्चेष्टा-वारकाय नमः।
ॐ मं दुःख-भञ्जनाय नमः॥६०॥
ॐ मं दुर्धर्षाय नमः।
ॐ मं हरये नमः।
ॐ मं दुःस्वप्न-हन्त्रे नमः।
ॐ मं दुर्धराय नमः।
ॐ मं दुष्ट-गर्व-विमोचनाय नमः।
ॐ मं भरद्वाज-कुलोद्भूताय नमः।
ॐ मं भू-सुताय नमः।
ॐ मं भव्य-भूषणाय नमः।
ॐ मं रक्ताम्बराय नमः।
ॐ मं रक्त-वपुषे नमः॥७०॥
ॐ मं भक्त-पालन-तत्पराय नमः।
ॐ मं चतुर्भुजाय नमः।
ॐ मं गदा-धारिणे नमः।
ॐ मं मेष-वाहनाय नमः।
ॐ मं अमिताशनाय नमः।
ॐ मं शक्ति-शूल-धराय नमः।
ॐ मं शक्ताय नमः।
ॐ मं शस्त्र-विद्या-विशारदाय नमः।
ॐ मं तार्किकाय नमः।
ॐ मं तामसाधाराय नमः॥८०॥
ॐ मं तपस्विने नमः।
ॐ मं ताम्र-लोचनाय नमः।
ॐ मं तप्त-काञ्चन-सङ्काशाय नमः।
ॐ मं रक्त-किंजुल्क-सन्निभाय नमः।
ॐ मं गोत्राधि-देवाय नमः।
ॐ मं गो-मध्य-चराय नमः।
ॐ मं गुण-विभूषणाय नमः।
ॐ मं असृजे नमः।
ॐ मं अङ्गारकाय नमः।
ॐ मं अवन्ति-देशाधीशाय नमः॥९०॥
ॐ मं जनार्दनाय नमः।
ॐ मं सूर्य-याम्य-प्रदेश-स्थाय नमः।
ॐ मं यौवनाय नमः।
ॐ मं याम्य-दिङ्-मुखाय नमः।
ॐ मं लोहिताङ्गाय नमः।
ॐ मं त्रि-दशाधिप-सन्नुताय नमः।
ॐ मं शुचये नमः।
ॐ मं शुचि-कराय नमः।
ॐ मं शूराय नमः।
ॐ मं शुचि-वश्याय नमः॥१००॥
ॐ मं शुभावहाय नमः।
ॐ मं मेष-वृश्चिक-राशीशाय नमः।
ॐ मं मेधाविने नमः।
ॐ मं मित-भाषणाय नमः।
ॐ मं सुख-प्रदाय नमः।
ॐ मं सु-रूपाक्षाय नमः।
ॐ मं सर्वाभीष्ट-फल-प्रदाय नमः।
ॐ मं सर्व-रोगापहारकाय नमः॥१०८॥

श्रीबुध-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ बुं बुधाय नमः।
ॐ बुं बुधार्चिताय नमः।
ॐ बुं सौम्याय नमः।
ॐ बुं दृढ-फलाय नमः।
ॐ बुं श्रुति-जाल-प्रबोधकाय नमः।
ॐ बुं सत्य-वासाय नमः।
ॐ बुं सत्य-वचसे नमः।
ॐ बुं श्रेयसां पतये नमः।
ॐ बुं अव्ययाय नमः।
ॐ बुं शशि-सुताय नमः॥१०॥
ॐ बुं सोमजाय नमः।
ॐ बुं सुखदाय नमः।
ॐ बुं श्रीमते नमः।
ॐ बुं सोम-वंश-प्रदीपकाय नमः।
ॐ बुं वेद-विदे नमः।
ॐ बुं वेद-तत्त्वज्ञाय नमः।
ॐ बुं वेदान्त-ज्ञान-भास्कराय नमः।
ॐ बुं विद्या-विचक्षण-विभवे नमः।
ॐ बुं विद्वत्पति-कराय नमः।
ॐ बुं ऋजवे नमः॥२०॥
ॐ बुं विश्वानुकूल-सञ्चारिणे नमः।
ॐ बुं विशेष-विनयान्विताय नमः।
ॐ बुं विविधागम-सारज्ञाय नमः।
ॐ बुं वीर्य-वते नमः।
ॐ बुं विगत-ज्वराय नमः।
ॐ बुं त्रि-वर्ग-फलदाय नमः।
ॐ बुं अनन्ताय नमः।
ॐ बुं त्रिदशाधिप-पूजिताय नमः।
ॐ बुं बुद्धि-मते नमः।
ॐ बुं बहु-शास्त्रज्ञाय नमः॥३०॥
ॐ बुं बलिने नमः।
ॐ बुं बन्ध-विमोचनाय नमः।
ॐ बुं बोधनाय नमः।
ॐ बुं वक्राति-वक्र-गमनाय नमः।
ॐ बुं वासवाय नमः।
ॐ बुं वसुधाधिपाय नमः।
ॐ बुं प्रसाद-वदनाय नमः।
ॐ बुं वन्द्याय नमः।
ॐ बुं वरेण्याय नमः।
ॐ बुं वाग्-विलक्षणाय नमः॥४०॥
ॐ बुं सत्य-वते नमः।
ॐ बुं सत्य-सन्धाय नमः।
ॐ बुं सत्य-सङ्कल्पाय नमः।
ॐ बुं सदाधाराय नमः।
ॐ बुं सर्व-रोग-प्रशमनाय नमः।
ॐ बुं सर्व-मृत्यु-निवारकाय नमः।
ॐ बुं वाणिज्य-निपुणाय नमः।
ॐ बुं वश्याय नमः।
ॐ बुं वाताङ्गिने नमः।
ॐ बुं वात-रोग-हृते नमः॥५०॥
ॐ बुं स्थूलाय नमः।
ॐ बुं स्थैर्य-गुणाध्यक्षाय नमः।

ॐ बुं स्थूल-सूक्ष्मादि-कारणाय नमः।
ॐ बुं अप्रकाशाय नमः।
ॐ बुं प्रकाशात्मने नमः।
ॐ बुं धनाय नमः।
ॐ बुं गगन-भूषणाय नमः।
ॐ बुं विधि-स्तुताय नमः।
ॐ बुं विशालाक्षाय नमः।
ॐ बुं विद्वज्जन-मनोहराय नमः॥६०॥
ॐ बुं चारु-शीलाय नमः।
ॐ बुं स्व-प्रकाशाय नमः।
ॐ बुं चपलाय नमः।
ॐ बुं जितेन्द्रियाय नमः।
ॐ बुं उदङ्-मुखाय नमः।
ॐ बुं मखासक्ताय नमः।
ॐ बुं मगधाधिपतये नमः।
ॐ बुं हरये नमः।
ॐ बुं सौम्य-वत्सर-सञ्जाताय नमः।
ॐ बुं सोम-प्रिय-कराय नमः॥७०॥
ॐ बुं सुफल-प्रदाय नमः।
ॐ बुं सुखिने नमः।
ॐ बुं सिंहादि-रूढ़ाय नमः।
ॐ बुं सर्वज्ञाय नमः।
ॐ बुं शिखि-वर्णाय नमः।
ॐ बुं शिवङ्कराय नमः।
ॐ बुं पीताम्बराय नमः।
ॐ बुं पीत-वपुषे नमः।
ॐ बुं खड्ग-चर्म-धराय नमः।
ॐ बुं कार्य-कर्त्रे नमः॥८०॥

ॐ बुं कलुष-हराय नमः।
ॐ बुं आत्रेय-गोत्रजाय नमः।
ॐ बुं अत्यन्त-विनयाय नमः।
ॐ बुं विश्व-पावनाय नमः।
ॐ बुं चाम्पेय-पुष्प-सङ्काशाय नमः।
ॐ बुं चारणाय नमः।
ॐ बुं चारु-भूषणाय नमः।
ॐ बुं वीत-रागाय नमः।
ॐ बुं वीत-भयाय नमः।
ॐ बुं विशुद्धाय नमः॥९०॥
ॐ बुं कनक-प्रभाय नमः।
ॐ बुं बन्धु-प्रियाय नमः।
ॐ बुं बन्ध-मुक्ताय नमः।
ॐ बुं बाण-मण्डल-संश्रिताय नमः।
ॐ बुं अर्केशान-निवासस्थाय नमः।
ॐ बुं तर्क-शास्त्र-विशारदाय नमः।
ॐ बुं प्रशान्ताय नमः।
ॐ बुं प्रीति-संयुक्ताय नमः।
ॐ बुं प्रिय-कृते नमः।
ॐ बुं प्रिय-भाषणाय नमः॥१००॥
ॐ बुं मेधाविने नमः।
ॐ बुं माधवासक्ताय नमः।
ॐ बुं मिथुनाधिपतये नमः।
ॐ बुं सुधिये नमः।
ॐ बुं कन्या-राशि-प्रियाय नमः।
ॐ बुं काम-प्रदाय नमः।
ॐ बुं घन-फलाशाय नमः।
ॐ बुं रोहिणेयाय नमः॥१०८॥

श्रीवृहस्पति-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ वृं गुरवे नमः।
ॐ वृं गुण-वराय नमः।
ॐ वृं गोप्त्रे नमः।
ॐ वृं गोचराय नमः।
ॐ वृं गो-पति-प्रियाय नमः।
ॐ वृं गुणिने नमः।
ॐ वृं गुणवतां श्रेष्ठाय नमः।
ॐ वृं गुरुणां गुरवे नमः।
ॐ वृं अव्ययाय नमः।
ॐ वृं जेत्रे नमः॥१०॥
ॐ वृं जयन्ताय नमः।
ॐ वृं जयदाय नमः।
ॐ वृं जीवाय नमः।
ॐ वृं अनन्ताय नमः।
ॐ वृं जयावहाय नमः।
ॐ वृं आङ्गीरसाय नमः।
ॐ वृं अध्वरासक्ताय नमः।
ॐ वृं विविक्ताय नमः।
ॐ वृं अध्वर-कृत्-पराय नमः।
ॐ वृं वाचस्पतये नमः॥२०॥
ॐ वृं वशिने नमः।
ॐ वृं वश्याय नमः।
ॐ वृं वरिष्ठाय नमः।
ॐ वृं वाग्-विचक्षणाय नमः।
ॐ वृं चित्त-शुद्धि-कराय नमः।
ॐ वृं श्रीमते नमः।
ॐ वृं चैत्राय नमः।
ॐ वृं चित्र-शिखण्डिजाय नमः।
ॐ वृं बृहद्रथाय नमः।
ॐ वृं बृहद्-भानवे नमः॥३०॥
ॐ वृं वृहस्पतये नमः।
ॐ वृं अभीष्टदाय नमः।
ॐ वृं सुराचार्याय नमः।
ॐ वृं सुराध्यक्षाय नमः।
ॐ वृं सुर-कार्य-हित-कराय नमः।
ॐ वृं गीर्वाण-पोषकाय नमः।
ॐ वृं धन्याय नमः।
ॐ वृं गीष्पतये नमः।
ॐ वृं गिरीशाय नमः।
ॐ वृं अनघाय नमः॥४०॥
ॐ वृं धीवराय नमः।
ॐ वृं दिव्य-भूषणाय नमः।
ॐ वृं देव-पूजिताय नमः।
ॐ वृं धनुर्धराय नमः।
ॐ वृं दैत्य-हन्त्रे नमः।
ॐ वृं दया-साराय नमः।
ॐ वृं दया-कराय नमः।
ॐ वृं दारिद्र्य-विनाशनाय नमः।
ॐ वृं धन्याय नमः।
ॐ वृं धिषणाय नमः॥५०॥
ॐ वृं दक्षिणायन-सम्भवाय नमः।
ॐ वृं धनुर्वीराधिपाय नमः।

ॐ वृं देवाय नमः।
ॐ वृं धनुर्बाण-धराय नमः।
ॐ वृं हरये नमः।
ॐ वृं अङ्गीरसाब्द-सञ्जाताय नमः।
ॐ वृं अंगिरस-कुलोद्भवाय नमः।
ॐ वृं सिन्धु-देशाधिपाय नमः।
ॐ वृं धी-मते नमः।
ॐ वृं स्वर्ण-कायाय नमः॥६०॥
ॐ वृं चतुर्भुजाय नमः।
ॐ वृं हेमाङ्गदाय नमः।
ॐ वृं हेम-वपुषे नमः।
ॐ वृं हेम-भूषण-भूषिताय नमः।
ॐ वृं पुष्य-नाथाय नमः।
ॐ वृं पुष्य-राग-मणि-मण्डन-मण्डिताय नमः।
ॐ वृं काश-पुष्प-समानाभाय नमः।
ॐ वृं कलि-दोष-निवारकाय नमः।
ॐ वृं इन्द्रादि-देव-देवेशाय नमः।
ॐ वृं देवताऽभीष्ट-दायकाय नमः॥७०॥
ॐ वृं असमान-बलाय नमः।
ॐ वृं सत्त्व-गुण-सम्पद्विभावसवे नमः।
ॐ वृं भूसुराभीष्ट-फलदाय नमः।
ॐ वृं भूरि-यशसे नमः।
ॐ वृं पुण्य-विवर्धनाय नमः।
ॐ वृं धर्म-रूपाय नमः।
ॐ वृं धनाध्यक्षाय नमः।
ॐ वृं धनदाय नमः।
ॐ वृं धर्म-पालनाय नमः।
ॐ वृं सर्व-देवतार्थ-तत्त्वज्ञाय नमः॥८०॥

ॐ वृं सर्वापद्-विनिवारकाय नमः।
ॐ वृं सर्व-पाप-प्रशमनाय नमः।
ॐ वृं स्व-मतानुगतामराय नमः।
ॐ वृं ऋग्वेद-पारगाय नमः।
ॐ वृं सदानन्दाय नमः।
ॐ वृं सत्य-सन्धाय नमः।
ॐ वृं सत्य-सङ्कल्प-मानसाय नमः।
ॐ वृं सर्वागमज्ञाय नमः।
ॐ वृं सर्वज्ञाय नमः।
ॐ वृं सर्व-वेदान्त-विदुषे नमः॥९०॥
ॐ वृं ब्रह्म-पुत्राय नमः।
ॐ वृं ब्राह्मणेशाय नमः।
ॐ वृं ब्रह्म-विद्या-विशारदाय नमः।
ॐ वृं समानाधिक-निर्मुक्ताय नमः।
ॐ वृं सर्व-लोक-वशंकराय नमः।
ॐ वृं सुरासुर-गन्धर्व-वन्दिताय नमः।
ॐ वृं सत्य-भाषणाय नमः।
ॐ वृं सुराचार्याय नमः।
ॐ वृं दयावते नमः।
ॐ वृं शुभ-लक्षणाय नमः॥१००॥
ॐ वृं लोक-त्रय-गुरवे नमः।
ॐ वृं श्रीमते नमः।
ॐ वृं सर्वगाय नमः।
ॐ वृं सर्वतो-विभवे नमः।
ॐ वृं सर्वेशाय नमः।
ॐ वृं सर्वदा तुष्टाय नमः।
ॐ वृं सर्वगाय नमः।
ॐ वृं सर्व-पूजिताय नमः॥१०८॥

श्रीशुक्र-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ शुं शुक्राय नमः।
ॐ शुं शुचये नमः।
ॐ शुं शुभ-गुणाय नमः।
ॐ शुं शुभदाय नमः।
ॐ शुं शुभ-लक्षणाय नमः।
ॐ शुं शोभनाक्षाय नमः।
ॐ शुं शुभ-ग्रहाय नमः।
ॐ शुं शुभ्र-वाहाय नमः।
ॐ शुं शुद्ध-स्फटिक-भास्वराय नमः।
ॐ शुं दीनार्ति-हराय नमः॥१०॥
ॐ शुं दैत्य-गुरवे नमः।
ॐ शुं देवाभिनन्दिताय नमः।
ॐ शुं काव्यासक्ताय नमः।
ॐ शुं काम-पालाय नमः।
ॐ शुं कवये नमः।
ॐ शुं कल्याण-दायकाय नमः।
ॐ शुं भद्र-मूर्तये नमः।
ॐ शुं भद्र-गुणाय नमः।
ॐ शुं भार्गवाय नमः।
ॐ शुं भक्त-पालनाय नमः॥२०॥
ॐ शुं भोगदाय नमः।
ॐ शुं भुवनाध्यक्षाय नमः।
ॐ शुं चारु-शीलाय नमः।
ॐ शुं चारु-चन्द्र-निभाननाय नमः।
ॐ शुं निधये नमः।
ॐ शुं निखिल-शास्त्रज्ञाय नमः।
ॐ शुं नीति-विद्या-धुरन्धराय नमः।
ॐ शुं सर्व-लक्षण-सम्पन्नाय नमः।
ॐ शुं सर्व-पूजिताय नमः।
ॐ शुं सर्वावगुण-वर्जिताय नमः॥३०॥
ॐ शुं समानाधिक-निर्मुक्ताय नमः।
ॐ शुं सकलागम-पारगाय नमः।
ॐ शुं भृगवे नमः।
ॐ शुं भोग-कराय नमः।
ॐ शुं भूसुर-पालन-तत्पराय नमः।
ॐ शुं मनस्विने नमः।
ॐ शुं मानदाय नमः।
ॐ शुं मान्याय नमः।
ॐ शुं मायातीताय नमः।
ॐ शुं महाशयाय नमः॥४०॥
ॐ शुं बलि-प्रसन्नाय नमः।
ॐ शुं अभयदाय नमः।
ॐ शुं बलिने नमः।
ॐ शुं बल-पराक्रमाय नमः।
ॐ शुं भव-पाश-परित्यागाय नमः।
ॐ शुं बलि-बन्ध-विमोचनाय नमः।
ॐ शुं धनाशयाय नमः।
ॐ शुं धनाध्यक्षाय नमः।
ॐ शुं कम्बु-ग्रीवाय नमः।
ॐ शुं कला-धराय नमः॥५०॥
ॐ शुं कारुण्य-रस-पूर्णाय नमः।
ॐ शुं कल्याण-गुण-वर्धनाय नमः।

ॐ शुं श्वेताम्बराय नमः।
ॐ शुं श्वेत-वपुषे नमः।
ॐ शुं चतुर्भुज-समन्विताय नमः।
ॐ शुं अक्ष-माला-धराय नमः।
ॐ शुं अचिन्त्याय नमः।
ॐ शुं अक्षीण-गुण-भासुराय नमः।
ॐ शुं नक्षत्र-गण-सञ्चाराय नमः।
ॐ शुं नयदाय नमः॥६०॥
ॐ शुं नीति-मार्गदाय नमः।
ॐ शुं वर्ष-प्रदाय नमः।
ॐ शुं हृषीकेशाय नमः।
ॐ शुं क्लेश-नाश-कराय नमः।
ॐ शुं कवये नमः।
ॐ शुं चिन्तितार्थ-प्रदाय नमः।
ॐ शुं शान्ति-मते नमः।
ॐ शुं चित्त-समाधि-कृते नमः।
ॐ शुं आधि-व्याधि-हराय नमः।
ॐ शुं भूरि-विक्रमाय नमः॥७०॥
ॐ शुं पुण्य-दायकाय नमः।
ॐ शुं पुराण-पुरुषाय नमः।
ॐ शुं पूज्याय नमः।
ॐ शुं पुरुहूतादि-सन्नुताय नमः।
ॐ शुं अजेयाय नमः।
ॐ शुं विजितारातये नमः।
ॐ शुं विविधाभरणोज्ज्वलाय नमः।
ॐ शुं कुन्द-पुष्प-प्रतीकाशाय नमः।
ॐ शुं मन्द-हासाय नमः।
ॐ शुं महा-मनसे नमः॥८०॥

ॐ शुं मुक्ता-फल-समानाभाय नमः।
ॐ शुं मुक्तिदाय नमः।
ॐ शुं मुनि-सन्नुताय नमः।
ॐ शुं रत्न-सिंहासनारूढाय नमः।
ॐ शुं रथस्थाय नमः।
ॐ शुं रजत-प्रभाय नमः।
ॐ शुं सूर्य-प्राग्-देश-सञ्चाराय नमः।
ॐ शुं सुर-शत्रु-सुहृदे नमः।
ॐ शुं कृशाय नमः।
ॐ शुं तुला-वृषभ-राशीशाय नमः॥९०॥
ॐ शुं दुर्धराय नमः।
ॐ शुं धर्म-पालनाय नमः।
ॐ शुं भाग्यदाय नमः।
ॐ शुं भव्य-चारित्राय नमः।
ॐ शुं भव-बन्ध-विमोचनाय नमः।
ॐ शुं गौड-देशेश्वराय नमः।
ॐ शुं गोप्त्रे नमः।
ॐ शुं गुणिने नमः।
ॐ शुं गुण-विभूषणाय नमः।
ॐ शुं ज्येष्ठा-नक्षत्र-सम्भूताय नमः॥१००॥
ॐ शुं ज्येष्ठाय नमः।
ॐ शुं श्रेष्ठाय नमः।
ॐ शुं शुचि-स्थिताय नमः।
ॐ शुं अपवर्ग-प्रदाय नमः।
ॐ शुं अनन्ताय नमः।
ॐ शुं सन्तान-फल-दायकाय नमः।
ॐ शुं सर्वैश्वर्य-प्रदायकाय नमः।
ॐ शुं सर्व-गीर्वाण-सन्नुताय नमः॥१०८॥

श्रीशनि-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ शं शनैश्चराय नमः।
ॐ शं शान्ताय नमः।
ॐ शं सर्वाभीष्ट-प्रदायिने नमः।
ॐ शं शरण्याय नमः।
ॐ शं वरेण्याय नमः।
ॐ शं सर्वेशाय नमः।
ॐ शं सैन्याय नमः।
ॐ शं सुर-वन्द्याय नमः।
ॐ शं सुर-लोक-विहारिणे नमः।
ॐ शं सुखासनोपविष्टाय नमः॥१०॥
ॐ शं सुन्दराय नमः।
ॐ शं घनाय नमः।
ॐ शं घन-रूपाय नमः।
ॐ शं घनाभरण-धारिणे नमः।
ॐ शं खद्योताय नमः।
ॐ शं मन्दाय नमः।
ॐ शं मन्द-चेष्टाय नमः।
ॐ शं महनीय-गुणात्मने नमः।
ॐ शं मर्त्य-पावन-पादाय नमः।
ॐ शं महेशाय नमः॥२०॥
ॐ शं छाया-पुत्राय नमः।
ॐ शं शर्वाय नमः।
ॐ शं शत-तूणीर-धारिणे नमः।
ॐ शं शुष्काय नमः।
ॐ शं चर-स्थिर-स्वभावाय नमः।
ॐ शं चञ्चलाय नमः।
ॐ शं नील-वर्णाय नमः।
ॐ शं नित्याय नमः।
ॐ शं नीलाञ्जन-निभाय नमः।
ॐ शं नीलाम्बर-विभूषाय नमः॥३०॥
ॐ शं निश्चलाय नमः।
ॐ शं वेद्याय नमः।
ॐ शं विधि-रूपाय नमः।
ॐ शं विरोधाधार-भूमये नमः।
ॐ शं वेदास्वाद-स्वभावाय नमः।
ॐ शं वज्र-देहाय नमः।
ॐ शं वैराग्यदाय नमः।
ॐ शं वीराय नमः।
ॐ शं वीत-रोग-भयाय नमः।
ॐ शं विपत्परं-परेशाय नमः॥४०॥
ॐ शं विश्व-वन्द्याय नमः।
ॐ शं गृध्र-वाहनाय नमः।
ॐ शं गूढाय नमः।
ॐ शं कर्माङ्गाय नमः।
ॐ शं कुरूपिणे नमः।
ॐ शं कुत्सिताय नमः।
ॐ शं गुणाढ्याय नमः।
ॐ शं गोचराय नमः।
ॐ शं अविद्या-मूल-नाशनाय नमः।
ॐ शं विद्याऽविद्या-स्वरूपिणे नमः॥५०॥
ॐ शं आयुष्य-कारणाय नमः।
ॐ शं आपदुद्धर्ते नमः।

ॐ शं विष्णु-भक्ताय नमः।
ॐ शं वशिने नमः।
ॐ शं विविधागम-वेदिने नमः।
ॐ शं विधि-स्तुत्याय नमः।
ॐ शं वन्द्याय नमः।
ॐ शं विरूपाक्षाय नमः।
ॐ शं वरिष्ठाय नमः।
ॐ शं गरिष्ठाय नमः॥६०॥
ॐ शं वज्रांकुश-धराय नमः।
ॐ शं वरदाय नमः।
ॐ शं अभय-हस्ताय नमः।
ॐ शं वामनाय नमः।
ॐ शं ज्येष्ठा-पत्नी-समेताय नमः।
ॐ शं श्रेष्ठाय नमः।
ॐ शं मित-भाषिणे नमः।
ॐ शं कष्टौघ-नाशिने नमः।
ॐ शं आर्य-पुष्टिदाय नमः।
ॐ शं स्तुत्याय नमः॥७०॥
ॐ शं स्तोत्र-कामाय नमः।
ॐ शं भक्ति-वश्याय नमः।
ॐ शं भानवे नमः।
ॐ शं भानु-पुत्राय नमः।
ॐ शं भव्याय नमः।
ॐ शं पावनाय नमः।
ॐ शं धनुर्मण्डल-संस्थिताय नमः।
ॐ शं धनदाय नमः।
ॐ शं धनुष्मते नमः।
ॐ शं तनु-प्रकाश-देहाय नमः॥८०॥
ॐ शं तामसाय नमः।
ॐ शं अशेष-जन-वन्द्याय नमः।
ॐ शं विशेष-फल-दायिने नमः।
ॐ शं वशीकृत-जनेशाय नमः।
ॐ शं पशूनां पतये नमः।
ॐ शं खेचराय नमः।
ॐ शं घन-नीलाम्बराय नमः।
ॐ शं काठिन्य-मानसाय नमः।
ॐ शं आर्य-गण-स्तुताय नमः।
ॐ शं नीलच्छत्राय नमः॥९०॥
ॐ शं नित्याय नमः।
ॐ शं निर्गुणाय नमः।
ॐ शं गुणात्मने नमः।
ॐ शं निरामयाय नमः।
ॐ शं निन्द्याय नमः।
ॐ शं वन्दनीयाय नमः।
ॐ शं धीराय नमः।
ॐ शं दिव्य-देहाय नमः।
ॐ शं दीनार्ति-हरणाय नमः।
ॐ शं दैन्य-नाशनाय नमः॥१००॥
ॐ शं आर्य-जन-गण्याय नमः।
ॐ शं क्रूराय नमः।
ॐ शं क्रूर-चेष्टाय नमः।
ॐ शं काम-क्रोध-कराय नमः।
ॐ शं कलत्र-पुत्र-शत्रुत्व-कारणाय नमः।
ॐ शं परितोषित-भक्ताय नमः।
ॐ शं पर-भीति-हराय नमः।
ॐ शं भक्त-सङ्घ-मनोभीष्ट-फलदाय नमः॥१०८

श्रीराहु-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ रां राहवे नमः।
ॐ रां सैंहिकेयाय नमः।
ॐ रां विदु-तुन्दाय नमः।
ॐ रां सुर-शत्रवे नमः।
ॐ रां तमसे नमः।
ॐ रां प्रणये नमः।
ॐ रां गार्ग्याननाय नमः।
ॐ रां सुरागवे नमः।
ॐ रां नील-जीमूत-सङ्काशाय नमः।
ॐ रां चतुर्भुजाय नमः॥१०॥
ॐ रां खड्ग-खेटक-धारिणे नमः।
ॐ रां वर-दायक-हस्ताय नमः।
ॐ रां शूलायुधाय नमः।
ॐ रां मेघ-वर्णाय नमः।
ॐ रां कृष्ण-ध्वज-पताक-वते नमः।
ॐ रां दक्षिणाशा-मुखस्थाय नमः।
ॐ रां तीक्ष्ण-दंष्ट्राकराय नमः।
ॐ रां शूर्पाकारासनस्थाय नमः।
ॐ रां गोमेदाभरण-प्रियाय नमः।
ॐ रां माष-प्रियाय नमः॥२०॥
ॐ रां काश्यपर्षि-नन्दनाय नमः।
ॐ रां भुजगेश्वराय नमः।
ॐ रां उल्का-पातयित्रे नमः।
ॐ रां शूल-निधिपाय नमः।
ॐ रां कृष्ण-सर्प-राज्ञे नमः।
ॐ रां वृष-त्वरा-व्रतास्थाय नमः।
ॐ रां अर्ध-शरीराय नमः।
ॐ रां जाड्य-प्रदाय नमः।
ॐ रां रवीन्दु-भीकराय नमः।
ॐ रां छाया-स्वरूपिणे नमः॥३०॥
ॐ रां कठिनाङ्गाय नमः।
ॐ रां द्विष-चक्र-भेदकाय नमः।
ॐ रां करालास्याय नमः।
ॐ रां भयङ्कराय नमः।
ॐ रां क्रूर-कर्मणे नमः।
ॐ रां तमो-रूपाय नमः।
ॐ रां श्यामात्मने नमः।
ॐ रां नील-लोहिताय नमः।
ॐ रां किरीटिने नमः।
ॐ रां नील-वसनाय नमः॥४०॥
ॐ रां शनि-सामन्त-वर्त्मगाय नमः।
ॐ रां चाण्डाल-वर्णाय नमः।
ॐ रां आत्मर्क्ष-भवाय नमः।
ॐ रां मेष-भवाय नमः।
ॐ रां शनि-वत्-फलदाय नमः।
ॐ रां शूलाय नमः।
ॐ रां अपसव्य-गतये नमः।
ॐ रां उप-राग-कराय नमः।
ॐ रां सूर्येन्दुच्छवि-ह्लाद-कराय नमः।
ॐ रां नील-पुष्प-विहाराय नमः॥५०॥
ॐ रां ग्रह-श्रेष्ठाय नमः।
ॐ रां अष्टम-ग्रहाय नमः।

ॐ रां कबन्ध-मात्र-देहाय नमः।
ॐ रां यातुधान-कुलोद्भवाय नमः।
ॐ रां गोविन्द-वर-पात्राय नमः।
ॐ रां देव-जाति-प्रविष्टकाय नमः।
ॐ रां क्रूराय नमः।
ॐ रां घोराय नमः।
ॐ रां शनेर्मित्राय नमः।
ॐ रां शुक्र-मित्राय नमः॥६०॥
ॐ रां अगोचराय नमः।
ॐ रां मौनये नमः।
ॐ रां गङ्गा-स्नान-दात्रे नमः।
ॐ रां स्व-गृहे भू-बलाढ्याय नमः।
ॐ रां स्व-गृहेऽन्य-बल-हृते नमः।
ॐ रां मातामह-कारकाय नमः।
ॐ रां चन्द्र-युत-चाण्डाल-जन्म-सूचकाय नमः।
ॐ रां जन्म-सिंहाय नमः।
ॐ रां राज्य-दात्रे नमः।
ॐ रां महा-कायाय नमः॥७०॥
ॐ रां जन्म-कर्त्रे नमः।
ॐ रां राज्य-धात्रे नमः।
ॐ रां मत्तका-ज्ञानदाय नमः।
ॐ रां जन्मकान्या-राज्य-दात्रे नमः।
ॐ रां जन्म-हानिदाय नमः।
ॐ रां नवमे पित्र-रोगाय नमः।
ॐ रां पञ्चमे शोक-दायकाय नमः।
ॐ रां द्यूने कलत्र-हन्त्रे नमः।
ॐ रां सप्तमे कलह-प्रदाय नमः।
ॐ रां षष्ठे वित्त-दात्रे नमः॥८०॥
ॐ रां चतुर्थे वैर-दात्रे नमः।
ॐ रां नवमे पाप-दात्रे नमः।
ॐ रां दशमे शोक-दात्रे नमः।
ॐ रां आदौ यशः-प्रदात्रे नमः।
ॐ रां अन्ते वैर-प्रदात्रे नमः।
ॐ रां कलात्मने नमः।
ॐ रां गो-चराचराय नमः।
ॐ रां धने ककुत्-प्रदाय नमः।
ॐ रां पञ्चमे दृषद्-शृङ्गदाय नमः।
ॐ रां स्वर्भानवे नमः॥९०॥
ॐ रां बलिने नमः।
ॐ रां महा-सौख्य-प्रदात्रे नमः।
ॐ रां चन्द्र-वैरिणे नमः।
ॐ रां शाश्वताय नमः।
ॐ रां सूर-शत्रवे नमः।
ॐ रां पाप-ग्रहाय नमः।
ॐ रां पूज्यकाय नमः।
ॐ रां पाठीर-पुर-नाथाय नमः।
ॐ रां पैठीनस-कुलोद्भवाय नमः।
ॐ रां भक्त-रक्षाय नमः॥१००॥
ॐ रां राहु-मूर्तये नमः।
ॐ रां सर्वाभीष्ट-फल-प्रदाय नमः।
ॐ रां दीर्घाय नमः।
ॐ रां कृष्णाय नमः।
ॐ रां अशिरसे नमः।
ॐ रां विष्णु-नेत्रारये नमः।
ॐ रां देवाय नमः।
ॐ रां दानवाय नमः॥१०८॥

श्रीकेतु-अष्टोत्तर-शत-नामावली

ॐ कें केतवे नमः।
ॐ कें स्थूल-शिरसे नमः।
ॐ कें शिरो-मात्राय नमः।
ॐ कें ध्वजाकृतये नमः।
ॐ कें नव-ग्रह-युताय नमः।
ॐ कें सिंहिका-गर्भ-सम्भवाय नमः।
ॐ कें महा-भीति-कराय नमः।
ॐ कें चित्र-वर्णाय नमः।
ॐ कें पिङ्गलाय नमः।
ॐ कें फल-धूम्र-सङ्काशाय नमः॥१०॥
ॐ कें तीक्ष्ण-दंष्ट्राय नमः।
ॐ कें महोरगाय नमः।
ॐ कें रक्त-नेत्राय नमः।
ॐ कें चित्र-कारिणे नमः।
ॐ कें महासुराय नमः।
ॐ कें तीव्रकोपाय नमः।
ॐ कें पाप-कण्टकाय नमः।
ॐ कें क्रोध-निधये नमः।
ॐ कें छाया-ग्रह-विशेषकाय नमः।
ॐ कें अन्त्य-ग्रहाय नमः॥२०॥
ॐ कें महा-शीर्षाय नमः।
ॐ कें सूर्यारये नमः।
ॐ कें पुष्प-वत्-ग्रहिणे नमः।
ॐ कें वर-हस्ताय नमः।
ॐ कें गदा-पाणये नमः।
ॐ कें चित्र-शुभ्र-धराय नमः।
ॐ कें चित्र-ध्वज-पताकाय नमः।
ॐ कें घोराय नमः।
ॐ कें चित्र-रथाय नमः।
ॐ कें शिखिने नमः॥३०॥
ॐ कें कुलुत्थ-भक्षकाय नमः।
ॐ कें वैडूर्याभरणाय नमः।
ॐ कें उत्पात-जनकाय नमः।
ॐ कें शुक्र-मित्राय नमः।
ॐ कें मन्द-सखाय नमः।
ॐ कें शिखिनेनापकाय नमः।
ॐ कें अन्तर्वेदिने नमः।
ॐ कें ईश्वराय नमः।
ॐ कें जैमिनि-गोत्रजाय नमः।
ॐ कें चित्रगुप्तात्मने नमः॥४०॥
ॐ कें दक्षिण-मुखाय नमः।
ॐ कें मुकुन्द-वर-पात्राय नमः।
ॐ कें असुर-कुलोद्भवाय नमः।
ॐ कें घन-वर्णाय नमः।
ॐ कें लम्ब-देहाय नमः।
ॐ कें मृत्यु-पुत्राय नमः।
ॐ कें उत्पात-रूप-धराय नमः।
ॐ कें अदृश्याय नमः।
ॐ कें कालाग्नि-सन्निभाय नमः।
ॐ कें नर-पीठकाय नमः॥५०॥
ॐ कें ग्रह-कारिणे नमः।
ॐ कें सर्वोपद्रव-कारकाय नमः।

ॐ कें चित्र-प्रसूताय नमः।
ॐ कें अनलाय नमः।
ॐ कें सर्व-व्याधि-नाशनाय नमः।
ॐ कें अपसव्य-प्रचारिणे नमः।
ॐ कें नवमे पापदाय नमः।
ॐ कें पञ्चमे शोकदाय नमः।
ॐ कें उपराग-गोचराय नमः।
ॐ कें पुरुष-कर्मणे नमः॥६०॥
ॐ कें तुरीये सुख-प्रदाय नमः।
ॐ कें तृतीये वैरदाय नमः।
ॐ कें पाप-ग्रहाय नमः।
ॐ कें स्फोट-कारकाय नमः।
ॐ कें प्राण-नाथाय नमः।
ॐ कें पञ्चमे श्रम-कारकाय नमः।
ॐ कें द्वितीये स्फुट-वाक्-दात्रे नमः।
ॐ कें विषाकुलित-वक्त्रकाय नमः।
ॐ कें काम-रूपिणे नमः।
ॐ कें सिंह-दन्ताय नमः॥७०॥
ॐ कें सत्येऽप्यनृत-वते नमः।
ॐ कें चतुर्थे मातृ-नाशनाय नमः।
ॐ कें नवमे पितृ-नाशनाय नमः।
ॐ कें अन्ते वैर-प्रदाय नमः।
ॐ कें सुता-नन्दन-बन्धकाय नमः।
ॐ कें सर्पाक्षि-जाताय नमः।
ॐ कें अनङ्गाय नमः।
ॐ कें कर्म-राश्युद्भवाय नमः।
ॐ कें उपान्ते कीर्तिदाय नमः।
ॐ कें सप्तमे कलह-प्रियाय नमः॥८०॥
ॐ कें अष्टमे व्याधि-कर्त्रे नमः।
ॐ कें धने बहु-सुख-प्रदाय नमः।
ॐ कें जनने रोगदाय नमः।
ॐ कें ऊर्ध्व-मूर्धजाय नमः।
ॐ कें ग्रह-नायकाय नमः।
ॐ कें पाप-दृष्टये नमः।
ॐ कें खेचराय नमः।
ॐ कें शाम्भवाय नमः।
ॐ कें अशेष-जन-पूजिताय नमः।
ॐ कें शाश्वताय नमः॥९०॥
ॐ कें नटाय नमः।
ॐ कें शुभाशुभ-फल-प्रदाय नमः।
ॐ कें धूम्राय नमः।
ॐ कें सुधा-पायिने नमः।
ॐ कें अजिताय नमः।
ॐ कें भक्त-वत्सलाय नमः।
ॐ कें सिंहासनाय नमः।
ॐ कें केतु-मूर्तये नमः।
ॐ कें रवीन्दु-द्युति-नाशकाय नमः।
ॐ कें अमराय नमः॥१००॥
ॐ कें पीडकाय नमः।
ॐ कें अमर्त्याय नमः।
ॐ कें विष्णु-दृष्टाय नमः।
ॐ कें असुरेश्वराय नमः।
ॐ कें भक्त-रक्षाय नमः।
ॐ कें वैचित्र्य-कपोत-स्यन्दनाय नमः।
ॐ कें विचित्र-फल-दायिने नमः।
ॐ कें भक्ताभीष्ट-फल-प्रदाय नमः॥१०८॥

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय के उपयोगी प्रकाशन

१.	**योगिनी-हृदयम्** (अमृतानन्द योगी की 'दीपिका' एवं श्रीभाष्कर राय की 'सेतुबन्ध' संस्कृत टीकाओं के साथ)	३३-४०
२.	**शारदा-तिलकम्** ('पदार्थादर्श' संस्कृत-टीका के साथ।)	१५०-००
३.	**गो-रक्ष-सिद्धान्त-सङ्ग्रहः** (नाथ-सम्प्रदाय का मूर्धन्य ग्रन्थ।)	१०-५०
४.	**परमानन्द-तन्त्रम्** 'सुबोधा'-नामक संस्कृत-व्याख्या के साथ।	९६-००
५.	**अष्ट-प्रकरणम्** (शैवागम का महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ।)	८०-००
६.	**नित्या-षोडशिकार्णवः** (शिवानन्द की 'ऋजु-विमर्शिनी' तथा विद्यानन्द की 'पदार्थ-रत्नावली' संस्कृत टीकाओं के साथ)	७६-००
७.	**शाक्तानन्द-तरङ्गिणी**	४४-००
८.	**रुद्र-यामलम् (भाग १ एवं भाग २)**	२९६-००
९.	**श्रीत्रिपुरार्णव-तन्त्रम्**	९६-००
१०.	**तन्त्र-सङ्ग्रहः (पाँच भागों में)**	४१४-००
११.	**गौतमीय-महा-तन्त्रम्**	९६-००
१२.	**श्रीतन्त्रालोक : (८ सजिल्द खण्डों में)** (आचार्य श्री अभिनव गुप्त द्वारा विरचित प्रसिद्ध ग्रन्थ आचार्य श्रीजयरथ की 'विवेक' एवं डॉ० परमहंस मिश्र की 'नीर-क्षीर-विवेक' हिन्दी-व्याख्या के साथ)	१४००-००
१३.	**काली-कल्पद्रु-वल्लरी**	२४०-००
१४.	**लुप्तागम-सङ्ग्रहः (दो-भाग)**	२०६-००
१५.	**स्वच्छन्द-तन्त्रम् (५ भागों में)**	३१०-००
१६.	**त्रिपुरा-रहस्यम्**	१४०-००
१७.	**ज्ञान-दीप-विमर्शिनी**	२२०-००
१८.	**नवरात्र-प्रदीप**	६०-००

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज २११००६

रजि० सं० ए० डी० ६१ रजि० सं० ३२९८१/५७

'ग्रह' नहीं, 'ग्रहों' के भावों को जानें!

यह जानना पर्याप्त नहीं कि
अन्तरिक्ष में 'ग्रह' विचरण कर रहे हैं।
यह जानना महत्त्व-पूर्ण है कि
'ग्रहों' के पीछे कौन-से भाव-शक्तियाँ हैं;
जिनसे स्वयं उनकी विशेष उपस्थिति है
एवम्
हम सब भी उनसे कुछ 'ग्रहण' करते हैं।
अतः नए संवत् की पावन बेला पर
इस अङ्क में प्रस्तुत हैं—
'नव-ग्रह-अष्टोत्तर-शत-नामावली'

सम्पादक/प्रकाशक/मुद्रक : श्री ऋतशील शर्मा, चण्डी-धाम, प्रयागराज-६ ✆ : ५०२७८३